राग
पलाश

राग पलाश

राग पलाश

विंगवर्ड प्रतियोगिता की सर्वोच्च काव्य रचनायें

पहला संस्करण

www.wingword.in

PUBLISHED BY WINGWORD PUBLICATIONS

Copyright © 2020

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other noncommercial uses permitted by copyright law. For permission requests, write to the publisher, addressed "Attention: Permissions Coordinator," at the e-mail address below.

permissions@wingword.in

Ordering Information:

Quantity sales. Special discounts are available on quantity purchases by schools, libraries, and others. For details, contact the publisher.

Orders by India bookstores and wholesalers. Please contact Wingword Distribution:
Tel: (091)8368069337; www.wingword.in

INR 300 | USD 7

ISBN: 978-81-947763-9-0

Cover Design by Dhanashree Pimputkar

The thoughts expressed within this book are of the respective Authors.

First Edition

Language: Hindi

Printed and bound in India by Anvi Composers

निर्देशिका

ख़ुशहाल	7
ज़िन्दगी ख़त्म से शुरू होती	9
इंसान	11
जीवन मंच	12
आश्चर्य क्या होता है?	13
कौन हो तुम मेरे लिए	14
मेरे दानव फिर से जाग रहे	16
गलतफहमियां	18
एक आग	19
बस बाकी सब ठीक है यहां	20
लौटा दे वो बचपन की बातें	21
देर नहीं लगती	22
डरना क्या, आखिर क्या होना है	23
तुम कायर हो तो वार करो	24
शून्य धन शून्य, शून्य होता है	25
अब मेरी चाहत सी लगती है	27
बदलते मायने	28
शब्द	29
चश्म-ए- बददूर	30
दामिनी	31
दावानल	32
नारी	34
जंगल की कोई उम्र	35
बड़ा ज़ालिम है	37
एक गलत गूंज थी वो	38
इंसानियत से इश्क	39
शाश्वत अनुराग	40
एक तरफा प्यार	41
कबीरा	43
ट्रेन की खिड़कियाँ	44
क्या देश बदल रहा है	46
शिकवे हज़ार	47
संकल्प	48
गुरुर और कुर्सी	49
नजरिया	50
बस अब बहुत हुआ	51
जीवन चक्र	52
मज़ार-ए-कुदरत	53
बकरी और ऑफिस	54
वतन की माटी	55
ईश्वर संदेश	56
कुछ अधुरी यादें	58
मंज़र	60
काश	61

लफ्ज़ 62
धुंध 63
तारीफ़-ए-हर्फ़ 65
मुंबई रिटर्न 69
पहली पंक्ति 71
खामोश! कोई सुन लेगा कहीं 72
घर 74
दुनिया का सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगें लोग 75
स्वेटर 76
सपने और संघर्ष 77
ये घर नहीं ये तो हॉस्टल है 78
गुफ़्तगू ... ख़ुद से! 79
गहराते जा रहे दाग 80
प्यार की परिभाषा 81
जोड़ते हुए 82
ढलती यारियां 83
कशमकश 84
अनुपयुक्त सर्वश्रेष्ठ 85
आंसु 86
पानी की प्यास 87
साजिशें 88
कुछ तो हिसाब होना चहिए 89
चाय 90
मेरे जीवन साथी 90
कुछ कहता पानी 92
रेत के टीले 93
दो सहेलियाँ 94
माझे बाबा 95
चल देना 96
निशब्द 97
कुछ समझ नहीं आता 98
अफसोस 99
जाली मित्रता 100

ख़ुशहाल

Shreya Deshpande

स्वतंत्र भारत में कहीं पर
एक छोटा सा गांव है
कहते है बड़ा ख़ुशहाल सा है।
गांव को स्वच्छता अभियान में पुरस्कार भी मिला है
गांव की सड़के हमेशा साफ़-सुथरी होती हैं
गांव में हर एक घर में शौचालय है और
हर एक घर में गैस पर खाना बनता है
गांव में स्कूल है, अस्पताल है,
लड़के तो क्या लड़कियाँ भी स्कूल जाती है
कहतें हैं बड़ा ख़ुशहाल सा गाँव है।

पर सुना है, की कुछ उड़ती-छुपती ख़बरें
गांव के अखबार में छपकर नहीं आती
गांव के एक कोने में एक दादी रहती है
सबसे बूढ़ी, सबसे प्यारी
छोटी पिंकी ने कल मुझे बताया के,
"सुना है पिछले साल दादी पर रेप हुआ था,
तबसे दादी किसीसे बात नहीं करती।"
पिंकी को घरवालोंसे बहोत डांट पड़ी
"ऐसा कुछ नहीं है मैडम जी,
बस बीमार रहती है बुढ़िया।"
कहतें है बड़ा ख़ुशहाल सा गांव है।

घांट के किनारे, मंदिर के पीछे एक पागल रहता है
कहते है,
कुछ भी बड़बड़ाता रहता है
पागल मुझसे आकर कहता है,
"मैडम जी, चले जाइये अपने शहर,
यहाँ नदी में लाशें तैरतीं हैं।"
पिछले महीने एक प्रेमी युगल ने
मंदिर में छुपकर शादी करने के बाद,
नदी में डूबकर जान दे दी थी
किसी ने अन्त्य संस्कार नहीं किया उनपर
दोनों लड़के जो थे
पर कहतें हैं बड़ा ख़ुशहाल सा गांव है।

कोई बोलता नहीं,
पर हर बच्चा जानता है,
की गांव की साफ़ सुथरी सडकोंके नीचे
हिन्दू-मुस्लिम दंगल में मारे गए लोगोंको दफनाया है
वैसे तो अब सब एकसाथ रहतें है,
दिवाली-ईद साथ साथ मनातें हैं

पर कभीकबार अंतरराष्ट्रीय घटनाओंकी खबर आते ही,
गर्मी के मौसम में,
हिन्दू और मुस्लिमोंके लिए
अलग-अलग पानी के टैंकर मंगवाएं जातें हैं

पर कहतें हैं बड़ा ख़ुशहाल सा गाँव है
सही कहते हैं।

ज़िन्दगी ख़त्म से शुरू होती

Prashant Bebaar

बड़ी अजीब सी है ये ज़िन्दगी
और बड़ी अजीब इसकी शुरुआत
सुना था, चिंगारी से लौ बनती है
पर यहाँ तो दो लौ मिल
एक चिंगारी पैदा करती हैं।

शुरुआत से भी ज्यादा गर कुछ अजीब है
तो वो है इसका अंजाम
रेत की घड़ी सा पल-पल गिरना
और इक रोज़ खत्म हो जाना
ज़िन्दगी में इतनी मशक़्क़त
इतने फजीते, किसलिए?
बस एक मौत के लिए।

फ़र्ज़ करो कि कभी यूँ होता
पहले हमारा इन्तेकाल होता,
कम से कम कुछ न सही
अंजाम का किस्सा तो ख़त्म होता

आँख खुलती तो कहीं बुज़ुर्गख़ाने में
काँपती हड्डियों में पैदा होते
शुरु में ठिठुरते, सिकुड़ते फिर धीरे-धीरे
हर दिन बेहतर होते जाते

और जिस दिन मज़बूत हो जाते
वहाँ से धक्के देके, निकाल दिए जाते
और कहा जाता, जाओ जाके पेंशन लाना सीखो

फ़र्ज़ करो कि कभी यूँ होता
फिर हम कुछ और बरस की पेंशन बाद
दफ़्तर को अपने कदम बढ़ाते
एक महीना और घिसते
फिर पहली तनख़्वाह पाते
एक नई घड़ी नए जूते लाते

कुछ पैंतीस बरस धीरे-धीरे,
माथे की हर उलझन सुलझाते
और फिर जैसे ही जवानी आती
महफ़िल में मशगूल हो जाते

शराब, शबाब और कबाब
आख़िर किसको ना भाते

दिल में सिर्फ़ ज़ायका जमता
कोलेस्ट्रॉल का खौफ़ नहीं
फिर जैसी मौज ऊँची सागर की
वैसे हौसले मैट्रिक में आते
अब तक सब रंग देख चुके थे
प्राइमरी भी पार कर ही जाते

फ़र्ज़ करो कि कभी यूँ होता
फिर एक सुबह जब आँख खुलती
ख़ुद को नन्हा मुन्ना पाते
जो ऊँघ रहा है बिस्तर में
कि बस घास में दौडूं
यही धुन है, यही धुन है

फ़र्ज़ करो कि कभी यूँ होता
ना उम्मीदों का बोझ रहता
ना ज़माने की कोई फ़िकर
बस मेरा गुड्डा मेरी गुड़िया
मेरा अपना शहर

और एक सुहानी रात
जब नाच रहा था चाँद
आसमाँ के आँगन में
हम एक नई जान बन
कभी किसी की गोदी में
तो कभी किसी सीने पे आते

और इस आखिरी पड़ाव पे,
अपनी ज़िन्दगी के
वो आख़िरी नौ महीने
ख़ामोश पर चौकस
तैरते हुए रईसी में
जहाँ हमेशा गर्म पानी है
एक थपकी भर से
रूम सर्विस आ जाती है
और जब भी मन करे
कोई सर सहला ही देता है

वहीं कहीं किसी
गुमनाम लम्हे में
हसरत और ज़रूरत के बीच
हम एहसास बन,
सिर्फ़ एक एहसास बन
कहीं अनंत में खो जाते
फ़र्ज़ करो कि कभी यूँ होता,
कि ज़िन्दगी ख़त्म से शुरू होती।

इंसान

Johnny Ahmed

सरल सी बात को इतना कठिन तुम क्यों बनाते हो
किसी मुफ़लिस को डाट में अंग्रेज़ी क्यों सुनाते हो।
तुम्हारी है ज़मीं और ये आसमाँ भी तुम्हारा है
हमें मालूम हैं ये सब मगर क्यों रोज़ बताते हो।
विदेशी गाड़ियाँ तुम खूब दौड़ाओ सौ की स्पीड में
मगर फुटपाथ पर तुम देर रात को क्यों चलाते हो।
तुम्हारी गोद में बैठा वो महंगा पालतू कुत्ता
सुना है उसको बस तुम मिनरल वॉटर पिलाते हो।
कोई भूखा मिल जाए अगर तुम्हें हाथ फैलाते हुए
कड़ी आवाज़ में उसको ख़ुद से दूर भगाते हो।
कभी गलती से भी तुम चार-आने देके आते हो
सुना है हर एक एंगल से कई सेल्फ़ी उठाते हो।
ज़रा सा दर्द नहीं होता तुम्हें उनके हाल पर
मगर तुम सीना तानके खुदकों इंसान बताते हो।

जीवन मंच

Himanshu Kumar

आज सुबह मेरी नींद खुली, और मन में एक ख़याल आया,
स्कूल के दोस्तों के जीवन में क्या चल रहा, ऐसा एक सवाल आया।

सारे खिलाड़ी, लेखक, कवि, चित्रकार, वैज्ञानिक बेच रहे हैं साबुन शैंपू तेल,
स्कूल में सब अलग था, कुछ थे अव्वल छात्र और कुछ हो जाते थे फेल।

जीवन के इस खेल में, ना आगे बैठना काम आया ना पीछे बैठ के कोई हार गया,
मैथ्स के टॉपर के तो बाल उड़ गए, फिजिक्स में फेल होने वाला छक्का मार गया।

आज मॉडल बन गई, वो बालों में तेल लगा चुप बैठने वाली राधा,
२ दोस्त जो कक्षा के बाहर मिलते थे, उनका खुद के धंधे में हिस्सा है आधा आधा।

सेना में भर्ती हो गया वो, पी.टी. सर से सबसे ज़ादा पड़ती थी जिसे,
क्रिकेट टीम का कैप्टन, सॉफ्टवयर् बना रहा होगा आज, ये पता था किसे!

हर ६ महीने में नोटिस बोर्ड पर तो ऊपर के नाम वाले कामयाब कहलाते थे,
आज ज़िन्दगी रोज़ परीक्षा लेती है, नीचे वालों के भी नंबर उतने ही आते हैं।

नंबरों की श्रेणी में बांट दिया था सबको, हालाकि, बंदे सारे ही नेक थे,
स्कूल ड्रेस सबके एक जैसे थे, लेकिन अरमान सबके दिलों में, कुछ कर गुजरने के अनेक थे।

आश्चर्य क्या होता है?

Hari Ram Singh

मेरे हृदयाभिन्न मित्र ने
वर्तमान व्यवस्था से खिन्न
कहा एक दिन मित्र-
वह दिन दूर नहीं-
जब बच्चे आश्चर्य का अर्थ पूछेंगे
और बड़े बड़े विद्वान सिर्फ बगले झाँकेंगे
हर आश्चर्य बिलकुल सामान्य हो जाएगा
और इसी रूप में वह मान्य हो जाएगा।
अखबारों में समाचार आएंगे-
बेटे ने बाप का अपहरण कर
माँ से फिरौती मांगी
भाई ने बहन के रोने की कीमत
डॉलर में आँकी।
राम ने भरत को जो खड़ाऊँ गिफ्ट की
उसके नीचे रिमोट चालित बॉम्ब फिट थी।
कृष्ण ने सुदामा की झोपड़ी छीन ली,
पारखी निगाहों से पसलियों की कीमत गिन ली।
पुरुरवा का उर्वशी प्रेम एक बहाना था,
उसे तो दहेज मे स्वर्ग लोक पाना था।
रावण और सीता की दोस्ती पुरानी थी
अपहरण की घटना तो मात्र एक कहानी थी।
हमने कहा मित्र ये सब तो रोज ही हो रहा है
भविष्य को छोड़ो
आज का अखबार देख लो
सच है, आश्चर्य पक चुका गूलर है
बस शीघ्र ही गिरेगा-
और धूल में मिल जाएगा।

कौन हो तुम मेरे लिए

Vivek Nidhi

कई मुलाक़ातों, कई अल्फ़ाज़ों,
यूँ कई बार नज़रें मिलाने के बाद,

कई आत्मगाथाओं, कई परिचर्चाओं,
यूँ कई बार पलक भिगाने के बाद,

कई समताओं, कई विषमताओं,
यूँ कई बार संभलने-सम्भालने के बाद,

सहसा आज ये प्रश्न उठा,
कौन हो तुम मेरे लिए?

मंथन किया, फिर उसका भंजन किया,
हर बार पर उसी प्रश्न का गुंजन हुआ,
आखिर कौन हो तुम मेरे लिए?

क्या इस हृदय वाटिका में खिले
हर पुष्प को महकाती इत्र हो,
या उसके सौंदर्य को बढ़ाती,
तितलियों में अंकित चित्र हो?

क्या इस अनंत मानस नभ में फैल
स्नेह वर्षा कराती जलधर हो?
शुष्क निर्जल प्राण भूमि जिससे
तृप्त तृप्त ममत्व से मानो तरबतर हो,

क्या इस निश्छल प्राण लौ को
कोमल कमलों से देती आधार हो?
फड़फड़ाते, टिमटिमाते को जैसे,
कर दिया तुमने संतुलित संवारा हो,

क्या इस जीवन बवंडर में फंसे
नाव को दीखता एकमात्र किनारा हो?
अपने पास जो खींच के बुलाये
पास जब कोई दिखे न सहारा हो,

कश्मकश चलता रहा,
मैं खड़ा बस देखता रहा,
प्रश्न स्थिर पर था वही
कौन हो तुम मेरे लिए?

हे चिर-संगिनी,

हे भ्रम-भंगिनी,
तुम नहीं कोई वर्णित किस्सा हो,
अचल-अवियोज्य,
अविरल-अभिन्न,
तुम मेरे हृदय का एक हिस्सा हो!

बस एक ही वाक्य से ख़त्म हो गया
विचारों के ये अपार जलजला
तुम एक विशाल अथाह समुद्र हो
और मैं, उसमें बना एक बुलबुला!

मेरे दानव फिर से जाग रहे

Shivansh Kandpal

मेरे दानव फिर से जाग रहे,
और मानुष डर से भाग रहे।
वो भूत काल के किसी छिद्र से,
मुस्काते हुए झांक रहे।
मेरे दानव फिर से जाग रहे।।

भयभीत हूं मैं और क्यों ना हूं,
विचलित क्यों हूं किस अर्थ कहूं।
किस यत्न से उनको बांधा था,
अब दुविधा अपनी किसे कहूं।
जो हृदय नर्क में बंदी थे,
वो सीमा अपनी तोड़ रहे।
और मनोबली सम महारथी,
सब व्याकुल हैं यह किसे कहूं।
जो वर्षों से थे सुप्त कहीं,
वो आज है निंद्रा त्याग रहे।
मेरे दानव फिर से जाग रहे।।

सब उथलपुथल सी है मन में,
ये स्वप्न अभी से विचलित हैं।
जो शांत करे मेरे मन को,
वो कारक सारे किंचित हैं।
कहीं रक्त से रंजित आंखें है,
जो तम से मुझको घूर रही।
उनकी दृष्टि से कहां बचूं,
यह प्रश्न हृदय में अंकित है।
उन प्रश्नों के उत्तर ये निर्बल,
मानुष मुझ से मांग रहे।
मेरे दानव फिर से जाग रहे।।

अब समय नहीं है संधि का,
इस बात को मैं भी समझ रहा।
उस पश्चाताप का मोल नहीं,
इस अग्नि में जो दहक रहा।
अब युद्ध है भीषण भीतर में,
परिणाम है जिसका पता नहीं।
ये रण मेरा ही मुझसे है,
जो मेरे अंदर पनप रहा।
मेरे पापों का रक्त यहां,
मेरे ही रक्षक मांग रहे।

ये दानव फिर से जाग रहे।।
इस बार मगर तुमसे हे! भय,
मै लड़ने को तैयार खड़ा।
ये मनोह्रदय सब मेरा जिनमें,
साहस का अंबार भरा।
अब छल हो चाहे जो भी हो,
ठोकर मै फिर ना खाऊंगा।
मुझ पर जो एक क्षण बीत गई,
उस अनुभव से तैयार खड़ा।
माना वो पाप किया मैंने,
पर बीज इसी दानव का था।
अब प्राण है जब तक मुझमें सुन,
मै मरने को तैयार खड़ा।
ये वीरगति खुद की रक्षा की,
देव मेरे अब मांग रहे।
मैं और नहीं भागूंगा अब,
जब मेरे दानव जाग रहे।
जब मेरे दानव जाग रहे।।

गलतफहमियां

Akshay Deora

तुम कहती थी कि तुम्हे पसंद है मेरे लिखे शब्द,

मैं उसे ही प्यार समझ लेता था,

तुम्हारे इर्द गिर्द ही एक ख्वाब पिरोया हुआ,

डायरी के किसी पन्ने में समेट लेता था।

सुनती थी तुम मेरे नज़राने मदहोश नज़रों के साथ

मैं उन नज़रों में ही मोहब्बत ढूंढ़ लेता था,

तुम्हारे ही आंखो पर लिखी दास्तां से,

तुम्हारी निगाहों में कहकशां तलाश लेता था।

ज़रूरी थी मेरी कुछ कहानियां तेरे लिए

तेरी ज़रूरत को ही मैं अपनी ज़रूरत समझ लेता था,

ज़रूरत शायद वो किसी गैर की खुशी से जुड़ी थी,

पर उस खुशी की वजह मैं अपना ही अक्स समझ लेता था।

एक आग

Gaurav Bhatnagar

एक आग है भभकती धधकती

एक आग है भभकती धधकती

ज़हन ज़ुबान ज़हानत को निगलती बेरंग सी अनदेखी सी

ज़हन ज़ुबान ज़हानत को निगलती बेरंग सी अनदेखी सी

नफ़रत के रेगिस्तान में सरफ़रोशी का सरब दिखाती

केसरिया और हरे को सफेदा अमन भुलवाती

नफ़रत के रेगिस्तान में सरफ़रोशी का सरब दिखाती

केसरिया और हरे को सफेदा अमन भुलवाती

बुझाने वालों को ग़द्दार बताती

एक आग है भभकती धधकती

एक आग है भभकती धधकती

बस बाकी सब ठीक है यहां

Rakshanda Goswami

खैरियत पूछी थी मां तुमने मुझसे,
वहां ना मैं बयान कर पाई,
दिल में कुछ बातें है मेरे,
जिन्हें लिखने को है कलम उठाई,
सुबह ये घड़ी मुझे उठाती है,
तेरी डांट खाती थी मै वहां,
सुबह की मीठी लड़ाई ना नसीब होती है,
बस बाकी सब ठीक है यहां।।

पहले तुझे पुकारती थी मां मेरे कपड़े है कहां,
अब सब खुद ही याद रखती हूं
बस बाकी सब ठीक है यहां।।

पापा का प्यार होता था,
भाई रुलाकर खुद रोता था,
अकेली नहीं कुछ लोगो से दोस्ती हो गई है,
भाई की लड़ाई ना जाने कहां खो गई है,
तेरे खाने में कमी निकलती थी ना,
मैस की सब्जी में ढूंढ़ती हूं पनीर है कहां,
घर आऊ तो अपने हाथ का खाना खिला देना,
बस बाकी सब ठीक है यहां।।

घर रहकर महसूस ही ना कर पाई
कि कितनी हिफाजत से तूने मुझे रखा है,
केसे बताऊं मां तुझे यहां,
लोगो के धोखे का स्वाद भी मैने चखा है,
परेशानी में सिर रखने को तकिया ही अब सहारा है,
कल तक तेरी गोद होती थी जहां,
ज़िन्दगी के कुछ नए रंग सीखे है बस,
बाकी सब ठीक है यहां।।

लौटा दे वो बचपन की बातें

Prafulla Srinivas

कोई तो लौटा दे वो बचपन की बातें
वो मौज़ों के दिन वो सुहानी सी रातें
वो पापा का गुस्सा, माँ की वो लोरी
लगे बिन उसकी, जीवन कोरी कोरी

बुला दो फिर से वो संगी-साथी बुला दो
फांदूं मैं फिर से, अपने घर के अहाते
कोई तो लौटा दे वो बचपन की बातें
वो मौज़ों के दिन वो सुहानी सी रातें

वो कंचों के खेल और लट्टू चलना
लड़ना झगड़ना और पिटना पिटाना
वही शोख यादें हैं, मुझको बुलाती
मम्मी की लड्डू अब मुझको रुलाती

दिला दो न, समोसे, कचोरी, पकोड़ी
खिला दो न, बचपन की मीठी वो भातें
कोई तो लौटा दे वो बचपन की बातें
वो मौज़ों के दिन वो सुहानी सी रातें

भैया के हाँ में वो हाँ का मिलाना
दीदी का गुस्से से, आखें दिखाना
बहानो की झील में, डूबना-उतराना
बातों ही बातों में, कसमों का खाना

बजा दो न फिर से वो छुट्टी की घंटी
वो फुर्सत के लम्हे, फकीरी की ठाठें
कोई तो लौटा दे वो बचपन की बातें
वो मौज़ों के दिन वो सुहानी सी रातें

सुना दो की फिर से वो किस्से सुना दो
दादी के परियों की, वो बातें बता दो
दूध से भरे गिलास में माँ का वो प्यार
बिन उसके लगे अब ये सूना संसार

वो बर्फी, वो लड्डू, वो पेड़ों की यादें
काश, हम फिर से बताशे जो खाते
कोई तो लौटा दे वो बचपन की बातें
वो मौज़ों के दिन वो सुहानी सी रातें

देर नहीं लगती

Kavita Singh

बहुत सोच-समझकर

अपना राज़दार चुनना..

देर नहीं लगती यहाँ,

राज़ को अखबार होने में!

सिरफ़िरे हो गए हैं लोग यहाँ,

समझते नहीं जज़्बातों को..

देर नहीं लगती यहाँ,

सबकुछ सरे-बाज़ार होने में!

किसी और से अपनी,

खुशियों की उम्मीद न रखना

देर नहीं लगती यहाँ,

मन को बेज़ार होने में!

नाज़ुक-सा दिल हो गर,

तो मोहब्बत न करना

देर नहीं लगती यहाँ,

तार-तार होने में...

डरना क्या, आखिर क्या होना है

Neeraj Tiwari

डरना क्या, आखिर क्या होना है
पाना वो ही है,जो बोना है।

पतझड़ में पत्तियां खोई,
मिली खाक में पर ना रोई,
जीवन के सृजन नियम से
वसंत में फिर ऊग आयी
अमावस की घोर निशा में,
जुगनू ने रोशनी की उम्मीद जगाई
दिनकर की तमहर किरणों ने,
विजय पताका फिर फहराई
सुख दुख धूप छांव,
अनुभव में संजोना है
डरना क्या, आखिर क्या होना है।

एक बूंद गिरी आसमां से,
क्या होगा भाग्य में, सोच घबराई
गिरी कमल पर तो इतराई
गिरी सीप पर तो मोती बन पाई
गिरी नदी में तो सागर में जा समाई
इस जीवन सफर में है अनिश्चितता जरूर,
पर मंजिल की पहचान इसी में है
चढ़ना, गिरना, थकना, फिर चढ़ना
जीत की दास्ताँ इसी में है
एक पल जब मृत्यु है शाश्वत तो,
हर पल में क्यों मरना है।
डरना क्या, आखिर क्या होना है।

मेरे जन्म से पूर्व में भी,
हवा वो ही थी, आफताब वो ही था
वो ही नदी थी, महताब वो ही था
दुनियां को पा लेने का,
सिकंदर मयी ख्वाब वो ही था
एक जमीं थी, जमींदार कई थे
इस धरा के हकदार कई थे
अब भी जमीं वो ही, धरा वो ही है
पर सिकंदर नहीं है
तेरे अस्तित्व का जवाब ये ही है
क्या खुद का था,जो खोना है।
फिर डरना क्या, आखिर क्या होना है ....

तुम कायर हो तो वार करो

Ruppesh Nalwaya

तुम कायर हो तो वार करो,
चाहे जितना अत्याचार करो।
टूटेगी ना ये आवाज़, है बुलंद,
जिस भी औज़ार से तुम प्रहार करो,
तुम कायर हो तो वार करो।

हम ना हिचकेंगे, ना बिखरेंगे,
और मज़बूत हो कर उभरेंगे।
अब पीछे ना हट पाएंगे,
भले ही सौ ज़ुल्म करो,
तुम कायर हो तो वार करो।

हम को भरोसा है 'सच' में,
ना किसी का डर हम में।
बातें घुमाना हमें आता नहीं,
जो कहना है साफ़ कहो,
तुम कायर हो तो वार करो।

झूठ के पहरेदारों को,
दमनकर्ता के यारों को,
मैं आँख मिला कर कहता हूँ,
थोड़ी सी तो शरम करो,
तुम कायर हो तो वार करो।

जो भी है सब न्योछावर है,
मेरा इंक़लाब ही दिलबर है।
हम निहत्थे ही आएंगे,
और होगी ये ललकार अहो,
तुम कायर हो तो वार करो।

शून्य धन शून्य, शून्य होता है।

Mohit Mishra

तुम,
जिस मानवता के लिए,
जिस धर्म के लिए,
जिस झूठ-सच की अपनी धारणा के लिए,
जिस कुर्सी के लिए,
जिस शक्ति के लिए,
जिस स्वर्ग, साम्यवाद, आर्य-द्रविड़ वर्त के लिए,
जिस वर्ग के लिए,
जिस जाति के लिए,
जिस प्रजाति के लिए,
आपस में लड़ रहे हो...
फेसबुक और ट्विटर पर,
घंटे बर्बाद कर रहे हो...
अंधे होकर जिस रावण को,
अपना परम शत्रु मान रहे हो...
जिस ज़िहाद की खातिर,
इंसानियत को भूले जा रहे हो,

वो,
तुम्हारे आत्मविश्वास के जैसा ही,
खोखला है।
तुम्हारे ज्ञान की भांति ही,
सीमित है।
तुम्हारी आत्मा की मानिंद
झूठा है।

जिस दुनिया में,
तुम राम राज्य लाना चाहते हो...
जिस परम लक्ष्य हेतु,
सबकी आवाज़ दबाना चाहते हो...
जिस आधार को,
तुम अपनी नैतिकता का संबल मानते हो,
जिस विचारधारा के कवच को,
तुम अपना कम्बल मानते हो,
वो उसी निमेश बदल जाता है,
जब तुम उसपर टिकते हो।

तुम्हारे त्रिशूल,तलवार,बम्ब और औज़ार,
तुम्हारी दूसरो का जीवन लेने की शक्ति,
तुम्हारा टीवी पर आना,
और सबके हाथों पूजे जाना,
तुम्हारा बहुमत में होना,

या अल्पसंख्यक बन रोना,
यह सत्य मिटा नहीं सकता,
कि तुम इन ब्रम्हा के कल्पो में त्रुटी मात्र हो,
और तुम्हे कोई अधिकार नहीं,
कि तुम,
खुद को,
किसी और से बड़ा मानो,
कि तुम यह विश्वास करो,
कि ब्रम्हांड का सत्य तुम्हे पता चल गया है,
और परमपिता ने अपने पैगम्बरों के माध्यम से
जीवन जीने का तरीका तुम्हे बता दिया है,
कि तुम्हारे अस्तित्व के पाखंड का कोई अर्थ है,
और यह पाखण्ड दुसरे पाखंडो से ऊपर है।

तुम वो शुन्य हो जो अपना अर्थ,
दुसरे शून्यो में खोजता है,
और अपने दंभ में भूल जाता है,
कि शुन्य धन शुन्य, शुन्य होता है।

अब मेरी चाहत सी लगती है

Priyanshu Rawat

तुम्हारी आहिस्ता और धीमी –
धीमी सी आवाज़ मे अक्सर,
कुछ अल्फाज़ धुंधले रह जाते है।
फ़ोन पर जब भी होती हो तो लगता है,
खफा है मुझसे किस्मत,
आवाज़ अनसुनी सी रह जाती है।

मेरे चंचल मन को तुम्हारी बातो की महक,
मधुर धुन सी मग्न कर जाती है।

सफर मे साथ तुम्हारा देख हमसफर,
ये दुनिया भी जल जाती है।

मै सागर, मेरी बिखरती लहरों मे,
तुम्हारी कस्ती का मुसाफिर मै बन जाऊ।

जिस तरफ हो रुख हवाओ का
उस किनारे मै थम जाऊ।

तुम्हारी सादगी पर अब मर मिटा है दिल मेरा,
तुम्हारी निगाहेँ भी अब मेरी धड़कनो से बात करती है।

इश्क़ का इल्म नहीं मुझे शायद,
ये इनायत खुदा की रेहमत सी लगती है।

इस इश्क़ को कैसे करू बया,
ये बेशुमार मेरी लहरों मे समाई बूंदो सी लगती है।

तेरे चेहरे को रोशन करता ये नूर,
अब मेरी चाहत सी लगती है।
अब मेरी चाहत सी लगती है।

बदलते मायने

Suchita Vardhan

गाँव की वो ऊँची -नीची पंगडंडिया कहाँ
दौड़-दौड़ के भी क़दम थकते न थे जहाँ

शहरों के ऊँचे- लंबे -चौड़े रास्ते फिर भी यहाँ
खाते हैं ठोकरें बच के चलो जितना भी जहाँ

बदल गये रिश्तों के मायने भी अब तो यहाँ
काका - काकी अब वो दादा -दादी कहाँ

मिज़ाज भी बदला इंसानियत का जहाँ
पल -पल बदला चेहरा ज़माने का यहाँ

सूख गए कुएँ सारे,बचा न अब पनघट कहीं
दिखती नहीं किसी राधा की अब मटकी कोई

खो गई वो गलियाँ और रास्ते भी कही
बनता जा रहा गाँव भी, अब शहर कोई

शब्द

Neeraj Manral

बस एक शब्द हूँ में

पानी के कांच पे

आसमान का लिखा हुआ

फ़िज़ा पे बैठा हुआ

सूरज की आंच पे रखा हुआ

हल्की बारिश के बाध

हरी हरी घास पे

धूप ने लिखा जो

बस वो नज़्म हूँ मैं।

कायनात की सरहदों पर

अंकों से बना हुआ नक्श हूँ मैं

एहसास के आइने पर

वक़्त का छोटा सा अक्स हूँ मैं।

बस एक शब्द हूँ मैं

चश्म-ए- बददूर

Hasit Bhatt

भाई के बारे में बताऊं तो...

कद थोड़ा छोटा, रंग ज़रा सा सांवला था,

दूर की नजर कमजोर थी, चश्मा लगाता था।

मम्मी ना हो तो शैतान, हो तो बेचारा बन जाता था,

लड़ाई हो जब भी, में गेंद, वह बॅट बन जाता था।

वैसे तो वह हररोज कोई नई शामत ले आता था,

कभी गब्बर की खिड़की, तो कभी टिचर से लडाई,

कभी बहार जाने के फंडे या मुझे रूलाने के फंदे।

पर मिट्टी सा था, बुंदों में खूब महक जाता था।

पर जैसे चिड़िया पर आने के बाद नहीं रूकती,

सफलता चख जाने पे ख्वाहिशें नहीं रूकती,

निकलना ही था उसे आखिर, अपने ख्वाबों को छूने।

वैसे तो हिसाब किताब में अच्छा था, पर समझा न था कि

ख्वाहिशों की कीमत घर पे कोई जिंदगी भर चुकाता रहेगा।

सच में दूर की नजर कमजोर थी, अच्छा था चश्मा लगाता था॥

दामिनी

Sachin Motwani

जब मैं जन्मी थी, क्या फूल खिले थे।
आज होश संभाला है, सब काटे हैं।
मैं तो सोने की कली थी ;
मै ही कुपात्र लोहा !
पर बहु की लाड़ली अब हुई सयानी थी ,
गेहू की कली अब फूट जनि थी।

बीज से अब बानी मैं बेला,
मैंने वहां क्या-क्या न झेल।
प्रिय ही तो थे, जलचरी का कटा ,
वारुणी ने हमें कुच्छ अलग ही बांटा ।

जन्मे, एक फल और एक फूल।
फल मेरा दुःख समझता नही ;
फूल से मैं दुःख बाटती नहीं।
दो बचपन, एक छपरा और मैं थी
मैंने संभाला पर न नशे ने सहायता की।
गर्मी तप्ती - बरसता पानी
माली की डाट भी मैंने, झट से खा ली।

अब थी फल के बढ़ने की बारी
बड़ी मुझपर एक और ज़िम्मेदारी
पड़ी मुझपर लेकिन उल्टी ही पारी।
घर त्यागा, मंदिर बने मेरे ही शस्त्रधारी।
फिर भी मैं लड़ती रही मंदिरो से ,
वो भी लड़ते थे, लेकिन मुझस।

अपने भी न थे अंजान, सब जानते थे।
जोगन का यही अंजाम, सब मानते थे।
बंधे मेरे १०० रूपये प्रति महीना,
मैं हस्ती - इतने का भी क्या जीना।
वह निर्दई भी करते मेरा अपमान
मैंने कहा कभी तो सुन मेरी ऐ भगवान।

आखिर वो दिन भी आया
मिलूंगी उससे जिसकी है यह भी माया।
वह भी न देख सका और मुझे बुलाया
तुम तो निकली स्वाति की काया।
माफ़ कीजिए मैं न हु अकेली एक,
हर चौराहा जनता है दामिनी उनेक।

दावानल

Sheetal Patil

विवस्वान की खिलती रश्मी,
सुबह सवेरे डार पर छायी
जंगल के ऊँघते पात पात ने ,
खोले नेत्र लेकर अंगड़ाई

घने सुहाने जीव मंडल पर,
बसते कितने जीव- जानवर
वन उप-वन के उंचे नीचे
वृक्ष पौधे,धरा मनोहर
शान से खडे बने धरोहर

दुर्गम अगम इन जंगलो मे
माँ से चिपके खेले कोआला
कही कांगारू उछलते फुदकते
निलगिरी से लिपटे सर्पो का जाला

गुनगने धूप को दे आलिंगन
कही गिलहरी लगाती दौड
विशाल छाया की चादर ओढे
निंदियाता जंगल किसी मोड

एक दिन कही दबे पाव से
धंस आया विकट दावानल
झुलसते जान-माल को देख देख
अनमना हो चला सारा जंगल

पशु-पक्षी ,जार जार
अटपटाये,झटपटाये
प्राणो को छिन चली अचानक
वह्नि की विकराल हवाये

घास जली तब
कास जली तब
दावनाल के अग्नितांडव मे
जीवन की हर, आस जली तब

आग धधक रही थी मन मे
आग धधक रही लोचन मे
सने वक्त से, अभिषिक्त रक्त से
आग धधक रही जीवन मे

करोडो जिवो ने खोयी जान
झुलसा तन सुखे पत्ते समान

क्या और कौन कैसे लगाये
उनकी हानी का अनुमान

चहकती आवजे हो गयी मौन
राख होकर अब चूप खडे है
जाने कितने दिन जुझकर, अब
जीवन-युद्ध मे धाराशायी पडे है

फिर भी आग ना रही थी थम
महिनो तांडव सा मौसम
एक दिन घिर आयी घटा घनघोर
बरसी बारिष झमा झमझम

मरहम लगाने ज़ख्म पर
जो थे निरंतर आहत
बुंदो ने बुझाकर आग
दिल को थोडीसी दि राहत

दर्द अभी भी है घायल,
ऐसें मोड से गुजर रहे
राख से फिर होकर जीवित
पीडा से अब उबर रहे

अंजानी राह चल पडे
जाने ले जाये कौन सी राह
अगले मोड शायद जीवन
खडा हो पसारे बाँह
खडा हो पसारे बाँह

नारी

Asha Devi

खुद से ज्यादा जो ले अपनों की जिम्मेदारी,
वह ईश्वर की अमूल्य रचना है नारी।

नारी वह अमूल्य वरदान है,
धैर्य व सहनशीलता में जो सबसे प्रधान है।

तु शक्ति है, तु भक्ति है, तुझसे ही यह ब्रहमांड सारा, तु जरूरत है हर घर की,
तु ही मां, बेटी, बहन, पत्नी के रूप में बनती सबका सहारा।

तु ही काली, तु ही चंडी, ऐसी तेरी माया,
जग की कोई भी शक्ति न तेरे आगे टीक पाया।

अब तुझे भरनी होगी और ऊंची उड़ान,
अपने बल और क्षमता से कर दे पापियों को सावधान।

तु न रुक, न झुक, न डगमगाने दे बढ़ते कदम अपने,
क्यों पापियों के डर से तु त्याग दे सारे सपने।

समय बदल चुका है, अब ना रहता कोई हताश,
अब हर स्त्री निकल पड़ी है करने खुद की तलाश।
धन्य हुं में और गर्व है मुझे स्त्री होने पर,
नारी शक्ति है अद्भुत अपार,
तेरी जय जय कार!!!

जंगल की कोई उम्र

Shambhavi Tiwari

माँ कहा करती थी,
मैदानों के बीच बसी उस नन्ही सी पंचवटी के
आँगन में खिलते वृंदावन को निहारते,
कि जंगल की कोई उम्र नहीं होती,
अद्भुत,अजर,अमर,अनादि ये वन
परम तत्व का रस लपेटे लीन हैं
साधना में निस्पृह,निराकार,हर निमेष में,
नीले नभ की छाया तले
किसी जोगन के भेष में,
न इनपर सोने का गुम्बद है,
न इन्हें घेरती पत्थर की दीवार,
न इनकी जड़ों में अर्जन ही किसी का संचित है,
ये जंगल भोग,आरती,श्रद्धा से भी वंचित है,
फिर भी यह कानन कुरु के कौन्तेय सरीखा है,
कर्मयोगी है ये,कर्मयोग ही सीखा है,
जो जंगल जैसी हो जाए,
वो साधना फिर अपना मार्ग नहीं खोती,
माँ कहती थी
कि जंगल की कोई उम्र नहीं होती।
पर आज माँ अपनी उम्र व्यतीत कर
जा चुकी है इस बीतती उम्र को पीछे छोड़
और छोड़ गई है वो बीती बातें
जिन्हें समेट कर मैं निकल पड़ा हूँ
अद्भुत, अजर,अमर,अनादि वन की खोज में,
माँ की बताई साधना के ओज में,
पर अहो!देख रहा हूँ मैं आज
मानवता की ऐसी ही रीत रही है,
आज जंगल की भी उम्र बीत रही है।
बरसों से सुलगा रहे हुक्के ये पर्वत
भट्ठियों के,खदानों के,
और जिनके धुएँ की प्रतिच्छाया की
छा चुकी है कालिमा
इस जंगल के यौवन पर,
उभर आई हैं काली सलवटें
इसके मस्तक सी बहती धाराओं में,
और छाले पड़ चुके हैं इसकी
देह के मौसमों पर,जिनमें जमा हुआ है मवाद
इसके निवासियों के विरोध का
तोड़ी मरोड़ी चीखों और चीत्कार का,
विकास के कोठों पर
मिटती संस्कृतियों की
देह के व्यापार का,

जहाँ बैठ कोई प्रदर्शनी
किसी परंपरा के प्रलाप पर प्रदर्शन पलीत रही है,
सच,जंगल की भी उम्र बीत रही है।
रेंगते,फुदकते,लाँघते, झूमते,
झपटते,सिमटते,फाँदते,घूमते,
लटकते,छिटकते,सिहरते,सरकते,
बरसते,झड़ते,सँवरते,टपकते,
इस जंगल की रागिनियों की नीरवता को
चीरते हुए आज गुज़र रहे कई पहिये लौह के,
भागते,कुचलते,रौंदते,मसलते,
शोर के आरोह के,
छोड़ते,पकड़ते,छीनते, तरसते,
लिप्सा, लालसा,विछोह के,
और खो रहा ये जंगल अपनी साधना की अनुगूँजें,
नीरव की ऊपर नीचे सरसराती साँसें,
जिनसे अब रव की प्रतिध्वनियाँ जीत रही हैं,
सच,जंगल की भी उम्र बीत रही है।
मौसम भर की मेहनतों में,
बीनकर लाई फुनगियों से
नीड़ के निर्माण बीच,
घंटों में ढहाए काटे पलाशों से,
खड़े हो रहे वे जिन्हें घर कहते हैं हम
दूसरों के घरों के श्मशानों पर बने
कपोल स्वप्न
जिनसे उपजता है मानव का
खोखला गर्व,
निरर्थक घमंड,
भ्रम प्रभुत्व का,
श्रेष्ठता का,स्वामित्व का,स्वत्व का,
जिनसे विपदा की वह एक संभावना
सदैव ही गुणातीत रही है,
पर फिर भी,मर रहा है जंगल,
और उसकी भी उम्र बीत रही है।

बड़ा ज़ालिम है

Hitpal Singh Ranawat

जैसे जरूरी हो पिचहत्तर फीसद, हाजरी करता है।

आजकल जिसे देखो, बस शायरी करता है।

उसकी एक आह से चले आते है लोग कई,

जैसे भेड़ो को बुलाने की कवायद गायरी करता है।

मुश्किल तो होगी ज़माने से मेरा तआरुफ़ कराने में तुम्हे,

क्या कहोगी? के कुछ नही, बस शायरी करता है।

अपने ढाये सितम से जानता है वो लोगो को,

बड़ा ज़ालिम है, आदम को डायरी करता है।

एक गलत गूंज थी वो

Siddharth Tripathi

हाँ मैं उस दिन चीखा था तुम पर,
एक गलत गूंज थी वो, मैं चाहता नहीं था।
एक दिन जब नकार दिया उस मौके को,
एक गलत गूंज थी वो, मैं चाहता नहीं था।

उल्झा था किसी गिरह को सुलझाने में,
बेमतलब सी वो, कुछ अजीब सी,
किसी को शौक ना था मुझे समझाने में,
सुलझाया ख़ुद ही, ना लगी फिर भी वो कुछ ठीक सी।

हल कर के भी सुकून ना मिला, तब लगा
एक गलत गूंज थी वो, मैं चाहता नहीं था।।

जब ख़ुद पर गुस्सा आया पर निकाल ना सका,
जो सुनने वाला था वो तो जा चुका था,
अब ख़ुद से लड़ने को हथियार न था,
मैं निहत्था था और तैयार न था।

पर जब उस दिन मैं खड़ा हुआ तब लगा,
एक गलत गूंज थी वो.. मैं चाहता नहीं था।

अब लगता है कि मजबूरी थी,
कोई इंतिख़ाब ना था,
कुछ तो सीखा होगा उस दौर से भी,
जो ना चाहा देख लिया कर के,

अब मौका ढूँढ ले इस दौर में भी,
कुछ ना हुआ तो भी लड़ना तो काम है,
अगर हुआ तो साबित होगा,
एक गलत गूंज थी वो, मैं चाहता नहीं था।

इंसानियत से इश्क

Ashwarya Kedia

शायद इससे सुनने के बाद तुम मुझसे नफरत करोगे,
बार-बार तुम शायद मेरे मजहब पर शक करोगे।
आज फिर वह दिन था जब पूरा देश इंडिया के नाम से गूंज रहा था ,
आज फिर वह दिन था जब चौकों की बौछार और छक्कों की बरसात के लिए हर देशवासी रो रहा था

जी हां,
बिल्कुल सही समझा आपने,
मैं उसी मुकाबले की बात कर रही हूं जिससे इस देश की हर गली जानती है ,
मैं उसी खेल का नाम ले रही हूं जिसे यह पूरा देश अपना मानती है,

लेकिन ,यह मुकाबला दो देशो का ना रहा अब दो मजहबओं का बन चुका है ,
ना जाने कैसा था वो इतिहास का पन्ना जो खुद तो ना रहा अब मगर दो आबाद देशों के बीच का फर्क बन चुका है ।
यह मुकाबला दो ऐसे मजहबौ का है जिन्होंने साथ साथ ऊंचाइयां भी देखी है और एक दूसरे पर तलवारे भी फेंकी है
दो ऐसे मजहब जिन्होंने प्यार और नफरत को अलग ही मायने में समझा है,
दो ऐसे मजहब जिनकी तकदीर उन अंग्रेजों की खींची लकीरों ने लिखा है

दुख तो बस इस बात का है कि कुछ लोगों ने इस खेल को जंग का मैदान मान लिया है ,
इतना खून बहाया जिस नफरत ने, इतना दुख पहुंचाया जिस हरकत ने ,इतने रिश्ते तोड़े जिन दीवारों ने उन्हें इन लोगों ने आज भी खुद से दूर नहीं किया है ।

अपनी जीत की खुशी तो मनाली हमने मगर उन सैकड़ों उम्मीदों का क्या जो आज टूट गए
दुख तो पहले से ही काफी था उन दिनों में मगर हम अपनी हरकतों से उन पर और भी जख्म छोड़ गए

इसलिए आज मुझे बस इतना कहना है कि कुछ तो कदर उनकी कोशिशों की भी करो ,
कुछ तो फक्र उस काबिलियत पर भी करो,
अरे जीत को शाबाशी तो सब देते हैं मगर तुम कुछ तो इश्क इंसानियत से भी करो।

शाश्वत अनुराग

Amar Dev Bahuguna

विवाह के लगभग पचास साल बाद,
संयोग से या यह कहें कि दैव योग से,
पूर्व प्रेमी और प्रेमिका की बस यूँ ही मुलाकात हुई,
टूटे हुए दिलों की दिल से बात हुई।
समय की चाल भाँपते हुए, और एक दूसरे के दिलों को आँकते हुए,
प्रेमिका ने प्रेमी से पूछ ही लिया कि और सुनाओ, पत्नी कैसी है?
प्रेमी से सहा ना गया, कहे बिन रहा ना गया।
झट से बोल उठा, जज़्बातों का पिटारा खोल उठा कि...
क्या कहूँ बहुत ही वैसी है।
जिसने मुझे सुख पाने को जीवन में पूरा सुखा ही दिया,
और तुमने मुझसे यह पूछ कर,
मेरे दुःखते हुए हृदय को दोबारा और अधिक दुःखा ही दिया।
तभी तो मैं आज तलक तुम्हें नहीं भूला हूँ,
उन्हीं वादों की यादों में, मैं अब तलक झूला हूँ।
जो अवस्था के इस मोड़ पर आकर, अनुभव के इस जोड़ पर जाकर,
बस यही समझा और जाना हूँ तथा अब यह अच्छी तरह माना हूँ कि...
जीवन में सदैव पत्नी कम, प्रेमिका ज्यादा होती है।
पत्नी यदि रुक्मणी है, तो प्रेमिका राधा होती है।
तभी तो राधा शास्वत है, 'अमर' है, जिसे नित लोग भजते हैं।
बेचारी रुक्मणी इस बात से कतई बेखबर है कि उसे क्यों लोग तजते हैं?
भले ही यह कपटी समाज आज पत्नी को सब बाहरी मान देता है सम्मान देता है, ले
किन हृदय से हमेशा प्रेमिका राधा को ही ऊँचा स्थान देता है।
क्योंकि पत्नी का सम्बन्ध इसी समाज से बनता है, और यह समाज नश्वर है,
जबकि प्रेम के अनुबन्ध को हृदय जनता है, जहाँ से सदैव अपनत्व रिसता है
और यही रिसाव तो प्रेम की प्रतीक राधा रूपी अविरल धारा है।
जो हृदय रूपी क्षीरसागर में स्वयं को ऐसा रमा लेती है कि
जगतगुरु कृष्ण तुल्य अमर देव को भी अपने आपमें ही समा देती है।।

एक तरफा प्यार

Ishant Gaba

ना जाने ऐसा ज़िन्दगी में क्यों होता है?
हम जिससे प्यार करें उसको किसी और से होता है
अफसोस तो तब बहुत होता है
लेकिन हम भूल जाते हैं
कि हमने भी किसी ना किसी का प्यार ठुकराया होता है।

हां मेरे दोस्त यही है एक तरफा प्यार

मज़ा तो बहुत आता था उसे रोज़ देखने में
उसके देखने पे मुंह मोड़ लेने में
हां ये प्यार था और वो भी एक तरफा
हस्ती वो थी और दिन मेरा हसीन हो जाता था।

दोस्त भी बड़े कमीने थे
उसकी कक्षा के आगे से ही निकलते थे
वहां पहुंचकर
ज़ोर ज़ोर से मेरा नाम चिल्लाते थे।

लड़के तो बहुत थे उसके भी पीछे
लेकिन वो किसी को भाव नहीं देती थी
तभी तो मैं भी अपने दोस्तो को कह दिया करता था
तम्हारे भाई की वजह से ही वो सबको ना करती थी।

आज तक मेरी हिम्मत नहीं हुई उससे कुछ कहने की
लेकिन मन में उसे हज़ार बार बुलाता था
वो बस मुझे देख के मुस्कुरा दे
इसकी दुआ हर रोज़ किया करता था।

असल में तो ऐसे ही उसको देखना पसंद करता था
उसकी एक हसीं पे अपनी जान देने को तैयार था
वो तो मिलने कभी आयी नहीं थी
लेकिन मैं उससे हज़ार बार मिल चुका था।

उसकी नज़र में थे कई सपने
जो करना चाहती थी वो सच्च में अपने
उसने तो कभी मुझे कहा नहीं था कुछ
लेकिन उसकी आंखों का जादू कुछ ऐसा था
जैसे सब कुछ बता दिया था उसने खुद।

हमारी मुहब्बत में भी कहां थी कोई कमी
चाहे वो करती रहती थी हमें नजरंदाज
लेकिन हमने भी आज तक आने ना दी उसकी आंखों में नमी।

ये एक तरफा प्यार दर्द भी बहुत देती है
ये दर्द सहने की ताकत भी हर किसी में नहीं होती है
खुशनसीब हैं लोग जिन्हें प्यार के बदले प्यार मिल जाता है
लेकिन बदनसीब तो हम भी नहीं क्यूंकि
उसके ख्यालों में भी मेरे सिवा किसी और का हक़ नहीं।

काश वो भी हमारे साथ होती
मेरे में भी कम नहीं था उसका फितूर
पर चलो वो खुश होनी चाहिए
हमरे साथ हो या हमसे दूर।

एक तरफा प्यार की बात ही कुछ अलग है
ना तो उससे कोई शिकवा और ना कोई शिकायत
उसको बस देखते रहना
बिना कोई बगावत।

पर हो सकता है वो भी मुझे पसंद करती हो
आगर उससे ज़िक्र कर देता तो शायद वो मेरी हो सकती थी
लेकिन ये पागल दिल को कोन समझाए
इसको एक तरफा प्यार करने की आदत जो हो गई थी।

कबीरा

Bhoomika Bhati

"कबीरा खड़ा बाजार में"
- २०१८ -

दुनिया का से का भई ,
जो हम सिरके उस पार l
यहाँ काल उठे तो फिर जाउन पड़े ,
उहि दफतर खेल बजार ll

सब गाडी में तेल भरात है ,
उ तेल दुहाती जमीन l
गाडी तेल को धुआँ करे ,
तू बंजर करे जमीन ll

भीड़ पड़ी संसार में ,
सब जीए लिए कोउ नाम l
जात-पहचाण सब छीन जावेगो ,
जदे इक वी त्यागा प्राण ll

प्रेम , राग सब दोष भया अब ,
सब भये तुच्छ और हीन l
मैं फकीर हां , इक शरीर हो ,
जामे दिल समाया तीन lll

सब के सब अमीर बनण चले ,
हाथ में पैसन दो चार l
देखन देख दिखाई देत जो ,
सबै मोह माया अपार ll

तमाशा मालूम भया ,
आबादी देख जमीन l
जद माटी में मिल जावेगो ,
तेरी तब होगी तौहीन ll

नफरत भरी जहान में ,
घबराया मन और जीव l
मौसम को भी मात दे गयी ,
आज की फितरत खेल और रीत ll

ट्रेन की खिड़कियाँ

Devesh Tanay

ट्रेन की खिड़कियाँ
कितनी अजीब होती हैं
सब कुछ जानती हैं मगर अनजान रहती हैं
बोलना चाहती हैं मगर चुपचाप रहती हैं

न जाने कितने मंज़र लिपटे हुए हैं इनकी आँखों से
कुली के छिले हुए कंधे देखे हैं
घरों से बिछड़ते हुए बच्चे देखे हैं
कितने लोगों को पटरियों पर कटते देखा है
लोकगीत गुनगुनाते हुए गाँवों के किनारे देखें हैं
धान पिरोती बारिश देखी है
सरसों के खिलखिलाते फूल देखे हैं ,
हाथ लहराते हुए बरगद के पेड़ देखें हैं
थरथराते हुए पुलों से तमाम नदियों की गहराई देखी है
बूढ़े बुजुर्गों को बीड़ी सुलगाते देखा है
गाँव के मंदिर को अकेलेपन से बतियाते हैं
आम के पेड़ों पर बड़े आराम से पंख खुजलाते हुए सुआ देखा है
शहर के कारख़ानों से जहर उगलता हुआ धुआँ देखा है
अपने साथ सफर करते हुए सूरज और चाँद देखें हैं
कुछ शहर आबाद तो कुछ शहर बर्बाद देखें हैं

ये हर स्टेशन पर बदलते मौसमों का मिज़ाज पढ़ती हैं
बम्बई के समंदर को पयाम करती हैं
पंजाब में लहराते दुपट्टों को सलाम करती हैं
राजस्थान में महसूस करती हैं रेत की तपन
दिल्ली आते - आते समझने लगती हैं सियासत की अगन
उत्तर -प्रदेश और बिहार के भदेसपन से प्यार करती हैं
बिन कहे ही डूब जाती हैं बंगाल के शोर में
जब कलकत्ता में हावड़ा ब्रिज क्रॉस करती हैं
इन्होने देखा है चद्रशेखर आजाद को
अंग्रेज़ों का खजाना लूटते हुए
इन्होने देखा है पकिस्तान को
हिन्दुस्तान से बिछड़ते हुए
इन्हें याद हैं सन सैतालिस के वो दृश्य
जिनमें कोई सरदार पुरानी दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर
अपनी बूढ़ी बेबे को ढूंढ रहा था
जब कोई भटका हुआ राँझा अपनी हीर का पता पूँछ रहा था
आज भी वो नज़ारा इन्हें याद है
जब लाहौर से दिल्ली तक
 हिन्दू -मुसलमान की लाशें ही सफर करती थीं
बॅटवारे की कई कहानियाँ इन्हें मुँहज़बानी याद हैं

लेकिन ये कुछ कहना नहीं चाहती
अतीत के स्पिरिट से भीगे हुए रुई के फाहे
किसी के ज़ख्म पर रखना नहीं चाहती

ये निकलती हैं अक्सर
एक शहर से दूसरे शहर के लिए
मगर कभी -कभी ये खिड़कियाँ
बीच जंगल में ही खो जाती है
न जाने कितनी ज़िंदगियाँ
इनके आसपास सो जाती है
रह जाता है तो सिर्फ
कफ़न के इर्द-गिर्द भटकता हुआ
सफ़ेद सन्नाटा

और
मैं अपने कमरे की खिड़की के पास
बैठे-बैठे सोच रहा हूँ
यार ! ट्रेन की खिड़कियों का कैनवास
कितना बड़ा है
हमारे घर की खिड़कियों में
केवल सुकून का शीशा जड़ा है
और ट्रेन की खिड़कियों में
संघर्ष का लोहा पड़ा है

क्या देश बदल रहा है

Pooja Dabi

आज देखों भारत माँ के नारों को कुचला जा रहा है
ओर भारत माँ के उन विरोधी नारों को सराहा जा रहा है
पता नही काहाँ गुम हो गयी है,माँ की ममता
जो भ्रूण मे ही बच्ची को मारा जा रहा है
आतंक से भरा, अपने वतन का तिनका -तिनका कतरा रहा है
क्या देश बदल रहा है

कोठारी तो क्या ? अब राही की राह भी थकने लगी है
देश की लाचारी ओर अपराधों को देखकर उनकी कलम भी रुकने लगी है
वो भी नाकाम हो रहे है
आज हर नेता अपना ही रोना रो रहा है
क्या देश बदल रहा है

आज हर गली मे सनाटा छा रहा है
हर अपराधी गलियों मे ठहाके मार रहा है
आज हर लड़की की आंखो मे खौफ है
भारत माँ का दिल भी रो रहा है
क्या देश बदल रहा है

इन नेताओं ने अपने स्वार्थ, अपनी राजनीति मे देश को कैसे उलझा दिया
एक सुकून की खबर नहीं अखबार मे सारा सुकून जला दिया
हर बार देश मे आतंकी हमले होते है, उनसे ज्यादा अपने ही लोग मरते है
कोई कुछ नहीं कर पाता क्योकि हर इंसान अपनी परवाह कर रहा है
क्या देश बदल रहा है

आज कोई भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को याद नही करते है
बस इतना है की उन्हे श्रदांजली जरूर दिया करते है
और कुर्बानीयों पर कफन चढ़ाया करते है
अब पता नही क्या होगा इस देश का भविष्य
ये बात आज बच्चा-बच्चा कह रहा है
क्या देश बदल रहा है

शिकवे हज़ार

Manika Kargeti

मुझे प्यार करने के ख़्याल से,

प्यार है उसे,

मगर मेरी हस्ती को अपनाने से,

सख़्त इंकार है उसे.

मुझे महज़ अपना साया बना देने की,

दिली दरकार है उसे,

मग़र मिटा देना हस्ती अपनी,

बिलकुल नाग़वार है मुझे.

जैसा भी हो, अपने वजूद से,

बेहद प्यार है मुझे.

मगर फिर भी उसकी मौजूदगी से,

अजीब सा सरोकार है मुझे.

बड़ी पेचीदा सी हैं ,

ये मेरे मन की गलियां ,

उसके होने से और उसके न होने से भी,

शिक़वे हज़ार हैं मुझे।

संकल्प

Ramniwas Singh Chahar

वर्ष की पहली किरण. युद्ध का पहला चरण।

झुलसेंगे-प्राण नरक कुंड में.अगर हरण हुआ नारी सम्मान।

भुजी अग्नि कुंड में, तो ले-लो रोगी प्राण ॥

वर्ष की पहली किरण, युद्ध का पहला चरण।

हृदय घृणा पर ना होगी आँसुओं की लगाम।

थमी लगाम तो. नही बनना आँखों का गुलाम ॥

वर्ष की पहली किरण, युद्ध का पहला चरण।

सन्नाटा-नृत्य करेगा चीर हरण पर।

चक्रव्यूह तोड़ेगा मनुष्य अभिमन्यु बनकर।

प्रेमी मृत्यु प्राण की, चीर कथा बृहमाण की ॥

वर्ष की पहली किरण, युद्ध का पहला चरण।

गुरुर और कुर्सी

Sanjeev Kumar

ना ही तो मिला वह गुरुर

जिसको लेकर घूमा पूरी उम्र

और ना ही दिखी वो कुर्सी

कहते थे जिसकी शोभा मुझसे ही बढ़ी।

राख ही थी बस

वो भी मेरे जिस्म की

कुछ जले टुकरे मिले

उस ढाचें के जिसके खाँचे मे मैं जढा था।

अब न जिस्म बचा ना ही उसका अक्स

बची तो केवल वे मीठी यादें

उस दौर की

जब न कुर्सी थी और न ही गुरूर।

नजरिया

Yogita Sharma

नजरिया बदलता है हंसते-हंसते

पर रिश्ते वही छूट जाते हैं

एक वो है एक वो था

पर यादें आज भी है जिंदा,

काश! वह हर लम्हा हम सही कर पाते ।

यादें बढ़ती गई समय चलता गया

फिर से जन्म एक और नजरिया

अनेकों रिश्ते बने कई वादियां घूम आए

पर हमेशा से ही गलत उतार-चढ़ाव

का कारण एक ही मिला वह था नज़रिया।

कागजों के पन्नों से हाथों की कलम बयां नहीं कर सकती

मानव को बांटने वाला नजरिया,

परमात्मा को याद करने वाला नजरिया,

वक्त का मीठा एहसास, जीवन का कड़वा सच

आपबीती या पलटवार

प्रत्येक को उसकी औकात बतलाता है नज़रिया ।

सोचो समझ को बदलना जितना मुश्किल है

उतना ही सरल बना दिया किसी के चरित्र को आंकना

क्या हर प्रश्नों का जवाब है नजरिया?

समझ की बात है यादों का सिलसिला बदलता है नज़रिया।

बस अब बहुत हुआ

Rachit Kumar Agarwal

बहुत हुआ काव्य का आखेट,
आओ इस बार नज़्म कोई गाते हैं,
तराने की सरगम को याद न करके,
कुछ पुराने लफ्ज़ो से ग़ज़ल बनाते हैं,

बहुत हुई मोहब्बत की बातें,
आओ अब कुछ यारी निभाते हैं,
लम्हों के मरहम को याद ना करके,
कुछ पुराने दोस्तों को साथ बुलाते हैं,

बहुत हुए किस्से अब पुराने,
आओ चेतना अब नयी बनाते हैं,
गीले-शिक़वे को याद ना करके,
इस बार किसी नयी जगह जाते है,

बहुत पहन ली ये समाज की बेड़िया,
आओ हटकर कदम कोई उठाते हैं,
रूढ़िवादियों को याद न करके,
नियम कुछ नए हम बनाते हैं,

बहुत हुई आलेखों की रचना,
आओ भाषण का प्रतिपाद अब कराते है,
खोखले हुए अगुआ को याद ना करके,
अब हम खुद ही को राजा बनाते हैं,

कब तक बंधे रहोगे रोज़मर्रा की जंजीरों में,
आओ कश्मकश को अब अपनी मिटाते हैं,
रंजिशों को अब याद ना करके,
सबको मिलकर हम गले लगते हैं।

जीवन चक्र

Saumya Singh

जीवन, जन्म, उमंग, उत्सव और हर्षोल्लास।
उम्र, समझ और कुछ कर गुजरने की आस।

ईश्वर,माँ-बाप, भाई-बंधु, शिक्षक, रिश्तेदार।
मित्रता, शत्रुता, ईष्या, इश्क़ और इज़हार।।

पड़ाव-दर-पड़ाव चाहत, तड़प और कर्म।
शिकस्त, घुटन, बिखरन, जीवन का मर्म।।

उठना, संभलना, पथिक का फिर चलना।
मेहनत, सफलता, ख्याति, सुकून मिलना।।

सांसारिक मोह, वासना, लालच, और भूल।
ज़िन्दगी, पासा, इम्तिहान, वक़्त और धूल।।

सबक, बोध, ज्ञात, मोहमाया और परित्याग।
ईश्वर, शरण, अध्यात्म, मोक्ष और देह त्याग।।

मज़ार-ए-कुदरत

Shubham Jain

ना बैर है मेरा आफताब से,

ना बैर है मेरा मेहताब से,

क्यों मेहताब सुबह नहीं आफताब शाम नहीं आते,

ना जाने क्यों मुझे कुछ मज़ार-ए-कुदरत रास नहीं आते।

खुदा को इतना पुजते,

जन्नत को इतना मानते,

एक दूसरे से हारते,

इंसान क्यों बाज़ नहीं आते।

जिस्म जिस्म की वासना में,

कितने फना हुए अब आसमान में,

तारे गिन गिन रातें काटते,

तन्हा सब यहाँ रोते ही आते,

ना जाने क्यों मुझे कुछ मज़ार-ए-कुदरत रास नहीं आते।

यादों को आँसूओं को,

सब पलकों तले ही रखते,

इन बड़े शहरों में सब गुमनाम सही है चलते,

सर झुकाए नफरत लिए क्यों एक दूजे से जलते।

अब गर्दिशों में भी चोरों का नाम हुआ है,

मशहूर हुआ मेहताब आफताब क्यों बदनाम हुआ है,

क्यों मेहताब सुबह नहीं क्यों आफताब शाम नहीं लाते,

ना जाने क्यों मुझे कुछ मज़ार-ए-कुदरत रास नहीं आते।

बकरी और ऑफिस

Shivani Jatrele

मम्मा तुम आफिछ मत जा न,
बिटिया मेरी मचल गयी|

कुछ समझाया, कुछ फुसलाया,
टॉफी का प्रलोभन दिलाया|

कुछ समझी, कुछ गयी समझायी,
आया की बाँहों में समायी|

धीरे से बोल पड़ी टाटा,
और मैंने गाड़ी स्टार्ट की सपाटा|

अगर मैं अभी रुकी और एक पल,
तो कहीं न फिर शुरू हो जाये वो चपल|

मन में अपराध बोध लिए,
उस अबोध के अनेकों बोल लिये|

डेढ़ साल की इस नन्ही बिटिया को,
मैं नहीं समझा पायी थी तब|

सांध्य बेला मैं घर आयी,
भागी आयी , वो चिपक गयी|

मम्मा देख वो बकली है कितनी प्याली,
मम्मी जैसी न्याली – न्याली|

फिर झुटपुटा घिर आया था,
उस शाम उसने मुझे बहुत सताया था|

हम दोनोँ निकले घर के बाहर,
बकरी नहीं दिखी हमें वहाँ पर|

मैंने पूछा बकरी कहाँ गयी ?
बोल पड़ी आफिछ ....

वतन की माटी

Indu Srivastava

माटी रे माटी तेरी कोई नहीं जाति

माटी रे माटी

तू कितने रूप संजोये

कभी मूरत बनी

कभी गागर बनके

जल को शीतल बनाये

माटी रे माटी,तेरी कोई नहीं जाति

वीरों के तू माथे में तिलक बन जाये

गद्दारों को तू खाक में मिलाये

तुने कितने रूप संजोये

माटी रे माटी

कभी हल्दी घाटी की याद दिलाये

कभी कुरुक्षेत्र की तू कहानी सुनाये

तेरे रूप पे दुनिया है वारि

सब तुझे अपनी बनना चाहे

माटी वतन की मिटन सिखाये

माटी रे माटी,तेरी कोई नहीं जाति

किसान के पसीने से सिंच तू मोती दिलाये

कही तू पत्थर,कही धूल-धक्कर

तेरी महिमा कोई समझ नहीं पाये

माटी रे माटी तेरी कोई नहीं जाति

ईश्वर संदेश

Shubhra Chandel

है झूठ तू हूं सत्य मै, है कर्ता तू तो कृत्य मै
है शब्द तू तो भाव मै, है धूप तू तो छांव मै

कण कण में है वास मेरा, हर पत्ते मे निवास मेरा
जो तूने पैरों से रौंदा वो भी मै, जो तूने हाथों से सहेजा वो भी मै

तू उससे करता छल है, जो आदि से अंत तक अचल है
तेरे पिछले पल का साक्षी मै , तेरे अगले पल का दर्शी मै
भविष्य मै अतीत मै. पतित है तू पुनीत मै

तेरे हृदय में बस जाऊँ हूँ इतना सूक्ष्म भी
हूँ धरती से आकाश तक विशाल मै
श्रंगार रस का श्रंगार हूँ, हूँ वीर रस की ताल मै

अमृत अगर चुराओगे तो मोहिनी बन जाऊंगा
तुम जितना भी छिपाओगे मै सब लिखता जाऊंगा
इस त्रिलोक का आलोक मै, भूलोक मै परलोक मै

हूँ शेर की हुंकार मै, इन चीटियों की कतार मै
जो डर गए तो डर भी मै,जो भिड़ गए ललकार मै

फूलों सा हूं कोमल भी, हूँ लौह सा फौलाद मै
पैदा करने वाला सृजनकर्ता, मारने वाला जल्लाद मै

हूँ आर भी हूँ पार मै,हूँ जीत भी हूँ हार मै
हूँ सूर्य सा स्पष्ट भी, हूँ भूतों का संसार मै

मै भूख हूं, हूं प्यास मै, आशीर्वाद मै अरदास मै
गरीबों सा फुटपाथी हूं, अमीरों सा हूं खास मै

जो प्रेम तुम तो हर्ष मै, हो जीवन तुम संघर्ष मै
सज़ा भी मै आनंद मै, सवाल तुम निष्कर्ष मै

हूँ शांति दूत, हूं युद्ध मै, हूँ पथ भी मै, अवरुद्ध मै
मै कंस सा अज्ञानी हूँ, हूँ ज्ञानियों मे बुद्ध मै

कबीर सा फकीर मै, निज़ाम सा अमीर मै
मीरा को जो पिलाई थी, वो विष वाली खीर मै

जो हाथ तूने थामा है, वो मेरा ही आदेश था
जो भूल के तू बैठा है, वो मेरा ही संदेश था
नदी भी मै भँवर भी मै, मंज़िल भी हूँ डगर भी मै

मै तेरा हूं ये पता नही पर तू मेरा है ये निश्चित है
जब संसार का मालिक तेरे साथ, फिर क्यूँ तू इतना चिंतित है?
हूँ रौद्र मै मासूम मै, परेशानी में सुकून मै

प्रपंच हूं, मै वास्तव भी; मै शांत रस, मै आरव भी
रावण की सेना का इंद्रजीत, हूँ महाभारत का कौरव भी

संगीत सा मधुर हूं मै, सुदामा हूं विदुर हूं मै
जो मर गए दफन हूं मै, उस शोक का रुदन हूं मै

साधारण मै अजीब मै, निर्जीव मै संजीव मै
जो आसमाँ तक उड़ गए, उन हौसलों की नींव मै

मै मोह हूं, हूं त्याग मै, विराग तुम हूं राग मै
माता हूं मै पिता हूं मै, हर गोपी का सुहाग मै

सब मुझमे हैं, हूं सब मे मै, मै इति हूं आरंभ मै
अंध विश्वासी का विश्वास हूं, हूँ तर्क मै विज्ञान में

मै मौलवी हूं पंडित मै; सम्पूर्ण हूं, हूं खंडित मै
कभी तुलसी पत्र से खुश हूं मै, कभी छप्पन भोग से क्रोधित मै

समीर मै, अनल भी मै; गंगा का बहता जल भी मै
शांत भी कोलाहल भी; समस्या मै तो हल भी मै

मै "शुभ्र" हूं मै भोला हूं
हूँ तांडव सा नाच मै
मै कृष्णा सा काला भी हूँ
हर मिथ्या का साँच मै

जो झूठ तूने कह दिया
वो हँस के मैने सुन लिया
मै जानता वो सच तेरा
जो मन में तूने बुन लिया

सारी सृष्टि का सार हूं, फिर भी बस एक विचार हूं
जो मान लिया तो शंकर मै और नही माना तो कंकर मै

मेरी ही रचित श्रष्टि मे मुझे ढूंढते हो?
मन के अंदर झांको, हूं वहीं विराजमान मै
हीरे मोती से नही मिलूंगा
दो पल ध्यान लगाओ
हूँ भावों का भगवान मै

कुछ अधुरी यादें

Siddhi Prabhu Chodnekar

(१)

किसी और के घर की खिड़की पर बैठे
वो ताक रही थी बाहर की ओर।
सोच रही थी,
"ये काली सी सड़क
नागिन की तरह अंगड़ाई लेकर
जाती तो है हर शहर में
क्या वो जाती होगी उस गांव भी
जिस गांव में बसता मेरा सुंदर सा इक घर?"

"याद आता है घर का आंगन
क्या वो भी मुझे याद करता होगा?
क्या मेरी तरह इस काली सड़क से
वो भी मेरा हाल पूछता होगा?
वो लाल फूल
जिनका नाम तो कभी पूछा नहीं
अभी भी खिलते होंगे शायद
और वो कुत्ता
जिसने कांटा था बचपन में
शायद पहले से भी और बड़ा हो गया होगा।"

"याद आता है मां का आंचल
जिससे और कई बार मुंह पोंछना बाकी था
हंसके पास बुलाने वाले
उन अनजान चेहरों से डर कर
उसमें छिप जाना अभी बाकी था।"

"याद आता है पापा का कंधा
जिस पर चढ़ कर बैठना अभी बाकी था
ज़मीन पर गिरने के डर से
पापा के बालों को कस के पकड़ना अभी बाकी था।"

कुछ आंसू छलके उसकी आंखों से
जो उसकी मजबूरी पर हंसे जा रहे थे
कब तक दूर रहुं में घर से
उसके दिल के अरमान पूछे जा रहे थे।

चाहती थी वो भाग कर जाना
पर इतनी हिम्मत कहां से लाती?
घर का आंगन तो उसे पता था
पर घर का पता वो कहां से ढुंढ लाती?

वहीं खिड़की पर बैठे
वो बुनती हजार सपने
जो ले जाते उसको उड़ा के
पंछीयों की तरह घर अपने
क्या पता था उसको की ये वो सपने हैं
जो कभी बन ना पायेंगे हकीकत
अभी तो यही उसकी किस्मत थी।
कभी घर को अलविदा ना कहा था
पर जो हुई थी मुलाकात पहले उस घर से
वो मुलाकात आखिरी थी।

(२)

वो लम्हा बीत गया, कईं साल बीत गए
वो खिड़की तो वहीं थी
पर वो लड़की जो हर शाम ताकती थी बाहर
वो लड़की वहां नहीं थी।
वो थी उस आंगन में
जहां आने की दुआ वो हमेशा मांगा करती थी
जहां जाने के लिए उस खिड़की में वो
पंछी बनने के ख्वाब देखा करती थी।

आंगन तो वहीं था, वीरान सा
जो शायद उसका हाल
उस काली सड़क से पूछ कर थक सा गया था।
लाल फूल तो कहीं दिखे नहीं,
ना ही दिखा वो कुत्ता
जिसने बचपन में उसे कांटा था।
घर तो खंडहर बन चुका था
जो अब रहने के लायक भी ना बचा था।

बची तो थी कुछ दिवारें,
जिनका रंग उड़ चुका था
बची थी वो छत,
जो कईं जगह गिर चुकी थी
बची थी कुछ खिड़कियां,
जिनके झरोखों से वो अंदर झांक रही थी।

जहां से देखा उसने
वहां बची थी अभी भी कुछ यादें
उसके मां के आंचल की
जहां छिपना अभी बाकी था।
वहां बची थी अभी भी कुछ यादें
उसके पापा के कंधे की
जिस पर चढ़ कर बैठना अभी बाकी था।

मंज़र

Akhilesh Sharma

जब खत्म कर काम, रात को लौट घर आते हैं,

कुछ अजीब से मंज़र रास्तों पर नज़र आते हैं।

सड़कें सोती है ना 'ट्रैफिक' थमता है यहां,

लोग भी इस 'मेट्रो' जेसै, हमेशा जागते नज़र आते हैं।

नींद से राबता टूट सा गया है लगता है,

कि इन सड़कों पर सभी बैचेन मुसाफ़िर नज़र आते हैं।

सबकी अपनी मंज़िलें हैं, अपना ही सफ़रनामा,

बस इन्हीं तंग रास्तों पर सब उलझे हुए नज़र आते हैं।

भीड़ तो बहुत है इस शहर-ए-आदम-ए-गुलिस्तां में,

एक काफ़िला साथ लिए सब दौड़ते नज़र आते हैं।

गर सच तो यही मालूम होता है, ए दिल-ए- नादां,

कि ज़िंदगी के इस सफ़र में सब तो शामिल हैं,

फिर भी, सभी तन्हा ही इसे गुज़र करते नज़र आते हैं।।

काश

Nikhil Mehra

पुष्य नक्षत्र की बूंद उदाहरण संगत का असर सब पर,
एक ही बूंद बनती जहर और वही बनती चमकता मोती।
होती साथ की छांव आज भी उन लोगो पर,
'काश' उन्होंने विश्वास की जड़े कमजोर न की होती।।

कोयल है स्पष्ट उदाहरण रंग नहीं कारण भिन्नता का,
रंग समान लेकिन वाणी से कौवे का तिरस्कार होता।
दिखाता सम्मान का आईना आज भी उन लोगो को,
'काश' उन्होंने तब अहंकार का पत्थर ना मारा होता।।

जंगल की ख़ामोशी बयां करती है शेर की मौजूदगी,
होता कुत्ता भी शेर अगर उसमें भौंकने की आदत ना होती।
आज़ाद होते आज पूर्वाग्रहों के अंतर्जाल उन लोगो के,
'काश' उन्होंने गलतफहमियों की शहादत दी होती।।

सहनशीलता बहुत जरूरी सिखाता है एक पत्थर भी,
हीरा बना रहता कोयला अगर उसने मार न सही होती।
चलती संबंधो की रेलगाड़ी उन लोगो की भी,
'काश' उसके नीचे सच्चाई की पटरी बनाई होती।।

सहायता है बहुत जरूरी, सिखाता है एक वृक्ष भी,
मिलती ना छांव अगर उसने कभी धूप ना सही होती।
होता सफलता का प्रकाश उन लोगो के घर पर भी,
'काश' उन्होंने ज्ञान के दीपक पर अपेक्षाओं की फूंक ना मारी होती।।

लफ्ज़

Esha Srivastava

कभी सब्र के उस मीठे फल जैसे,
मानो मुरब्बे की बरनी में अपनी उम्र पका रहे हों
कई अरसों से तर रहें हों जो,
ढक्कन के खुलते ही अपनी महक फैलाएं..
रिसने से वो ज़रा कतराएं
पर एक तार की चाशनी जैसे,
तल छूने से फिर वो बच न पाएं
टप से वो टपक ही जाएं..

कभी चाय में भीगे उस बिस्किट की तरह,
जिसने काफी लुत्फ़ उठा लिए हों
दो पल ज़्यादा और ज़रा गहरी ही डुपकी लगा ली हो
अपनी मिठास कप में छोड़ जाए जो,
पर खुद कभी पूरा बाहर न आए वो
जिसकी जोशीली आगोश से प्याला भी कुछ घबरा सा जाए
जितना चाहें चमचा घुमाएं, फिर वो हाथ न आए
ऐसे हरफनमौला को जनाब, आप ही बतलाएं कौन समझाए?

बोतल में फसी, सख़्त हुई..सौस के जैसे कई बार,
किराए के मकान में महल सपनों का बनाना चाहें
धक्के खाकर ही मानें, पिनपिनाते हुए बाहर आएं
फिर कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही दोस्ती जताऐं
या कभी तालू पर ठोस हुए ईसबगोल की तरह सताएं
बहुत सारे, एक साथ चिपके हुए..
न घर के, न घाट के..अल्लाह जाने क्या बतलाएं
लेकिन हाज़मा बेहतर करने का यकीन पक्का दिलाएं

फिर कभी तबीयते मिजाज़ बिगड़ जाने पर,
हकीम मीयां की उस कम्बख़्त दवा की तरह याद आएं
जो इतनी कड़वी कि हलक से उतने का नाम न लेती,
पीने के डर से जिसे, नासाज़ हाल खुद-ब-खुद ही ठीक हो जाऐं
कभी-कभी मगर वो कड़वे ही जिगर को भाएं
ख़ाला के उन लज़ीज़ करेलों की जो याद दिलाऐं
तो कभी बचपन की उस तेरह पेंचों वाली पतंग के जैसे
हबड़-तबड़ में गलती से अपना ही मांझा वो काट जाएं...

(कुछ खट्टे, कुछ मीठे, मगर शायद ही कभी पूरे,
कुछ अपने आप में ही मुक्कमल..
हमेशा कुछ कम, कुछ ज़्यादा से,
कुछ खामोश, कुछ ख़फा से
और कभी न होकर भी हर तरफ़, हर जगह.
पर हमेशा कुछ अधूरे से. बहरहाल...)

धुंध

Arun Kumar Singh

नजर मंद है कि धुँआ है, धुंध है,
कि गुम शोर मे है सच गुमशुदा,
पर बुदबुदाता एक सवाल है,
कि है कौन वो, अगर है भी वो,
क्यों देता नही इतना जता,
कि बड़ा खौफ है, दिलों मे दर्द है,
पर अभी सोच भी तो है जमी हुई,
कि पड़ी लम्बी बड़ी, यह सर्द है,

है राहें कई, पर जुदा-जुदा,
कहीं भीड़ है, क्या शोर है!
है पता नहीं छोर का,
पर गजब मची यह दौड़ है,
नशा गहरा है, शायद सच का है,
पर सुर्ख क्यों यह रंग है,
क्यों कत्ल होती जिंदगी,
क्यों जल रहा इंसान है,
इनके सच से परे तो मुस्कान थी,
पर सच से पड़ा बेजान है

सच क्या है उसका, है वो चीज क्या
वो एक है, या वो अनेक है
है खुशी, या मातम है वो
कुछ है भी या बस अफवाह वो

पर चलो माना वो ईश्वर है मेरा
रचनाकार इस संसार का
जिसके हाथों मे एक छोर है
हम कठपुतलीयों की डोर का
बावजूद इसके ना जाने कितने
मिट गए उसके आस में
कईयों को मारा कुछ खुद मरे
उसके अंधविश्वास में

हो अब साँस का विश्वास क्या
जब हर ओर पसरा आग है
जब हमने खुद ने, अपने जहन में,
कर दिया सोच नज़रबंद है,
तंग सोच उसपे भेड़चाल
लिया मान नाम धर्म है
कि उसके नाम पे जायज है सब

भले नदी सुर्ख हो या मरघट पटे
पर पड़ता फरक यहाँ किसे
जो तमाशबीन भी बड़े बेशर्म हैं

यूँ अश्कों के सैलाब से, तर मातमी हर शाम है
तल्ख नज़रों से घुटी, बे
आवाज यूँ मुस्कान है
कि इन मजहबीयों कि बस्ती से
मासूमियत गुमनाम है
दिखते सोचते तो सारे हैं
पर कोई सोचता नहीं
कि कैसी सड़न ये सोच मे
न जाने कैसी बन्दगी
एक अन्धेरी खाई के
इर्द गिर्द सिमटी जिन्दगी

पर बेचैन दिल को भी तो तलब
तेरे सहारे तेरी उम्मीद की
सच ही है की तुम ही हो
टूटे बिखरे दिलों का आसरा
जिसका कुछ भी नहीं था इस जहाँ
कई जग के मारे लोगों का
तेरी आस थी तो जी लिए
वर्ना मिट चूका होता निशां
भले कोस लूँ मै तुझको जितना भी
नकार मै सकता नहीं
एक अजब सुकून् है तेरे नाम में
झुठला ये मै सकता नहीं

कि अजब है कश्मकश है अजब घुटन
चला तुझे ढूंढने पर पहले क्यों
न दिखा मुझे मेरा अंधापन
कि तेरी शख्सियत की उलझनों में मैं
खोया रहा कुछ इस कदर
तेरे नाम की मुस्कान से बेनज़र किया तेरा असर
जो बुरा है तु तो अच्छा भी है
अगर झूठा है तो सच्चा भी है
तु एक सोच है एक विश्वास है
बयाँ बेलब्ज़ ऐसे है मगर
कुछ अलग एक एहसास है
बस हममें प्यार की लौ जलती रहे
ये धुंध सारी छँट जाएगी
आग जो लगी है वो
खुद ब खुद बुझ जाएगी
फिर जिन्दगी मुस्काएगी
कली मरघट में भी खिल जाएगी

तारीफ़-ए-हर्फ़

Subi Kumari

विधवा सी खिंचती हुई सफ़ेद दोपहर की धूप है,
और वो हैं।
जले पाँव लिए पूछ रहे हैं हमसे,
“इतनी गर्मी में कोठे पे आ कर आसमान तकने का सुझाव जो है,
सच में उनके साथ कुछ वक़्त बिताना है हमें,
या कुछ क्रान्तिकारी लिख जाने की नयी लौ है?

इज़्तेरार है फ़िर जुस्तज़ू है फिर सुकून है और मोहब्बत है
या है सुकून, मोहब्बत, इज़्तेरार फ़िर जुस्तज़ू है?
इन लफ़्ज़ों में उलझी रहती हो तुम
तुम्हें और काम क्या है!
ये कैसी रिवायत में फँसी हो तुम कि हमपर एक लफ़्ज़ नहीं लिख पाती?
बताना हमारे सौत का नाम क्या है।”
जले पाँव लिए पूछ रहे हैं हमसे,
और हम मुस्कुराए जा रहे हैं कि हमपर ये इल्ज़ाम क्या है।

जले पाँव लिए कह रहे हैं हमसे,
“तुम मिली थी जब हमें हमारे शहर की महफ़िल में,
जाम में इश्क़ लिए फिर रही थी।
हमसे टकरायी और हमारे सुफ़ेद कुर्ते पर,
जाम के सारे रंग चढ़ गए।
कुर्ता हमारा वॉशिंग मशीन में था,
पर हम महफ़िल में ही रह गए।

हमने जब तुम्हारी नज़रों को पहली बार देखा,
मशाल्लाह! सिर्फ़ नज़र कैसे कह सकते थे उन्हें?
वो तो पैमाने थे शबाब के, इनायत के।
उन नज़रों में सौ सैलाब थे वस्लों से भरे,
इक पल मोहब्बत के तो अगले पल क़यामत के।”

जले पाँव लिए कह रहे हैं हमसे,
“पता नहीं अब कौन हो तुम।
कोई अनजान सी पहलू,
या आशना मुख़्तसर वक़्त के लिए।
कोई ज़रिया हो क्या तुम,
नफ़रत के आगे की उल्फ़त के लिए?
यूँ तो पहचान लेते हम जो होती दर्द-ए-क़ासिद कोई।
पर तुम्हें अब देखते हैं तो हैरान हैं
कि तुम्हें जानते हैं या जानते भी नहीं।

बताना ज़रा कौन हो तुम?

पहले तो आफ़ताब थी, अब क्या पूरा सहर?
या विधवा दोपहरी का बोझ अपनी क़लम की नोंक पे लिए,
सहर के बाद की अंधेरी रात कोई?
अंधेरों से तो वाक़िफ़ हैं हम
मग़र तुम्हें जानते हैं या जानते भी नहीं?"

जले पाँव लिए पूछ रहे हैं हमसे,
"अब हमपर क्यूँ नहीं लिख पाती?
एक साल में ऐसा क्या हुआ?
हम रूखे नज़र आने लगे हैं,
या हमसे बेहतर कोई नज़र आ गया?
हमसे दोपहर को मिलती हो,
रात तुम्हारी किसी और की सोहबत में होती है।
हँसी में तग़ाफ़ुल कर देती हो
जब तुम्हारी बेरुख़ी की बात होती है।"

जले पाँव लिए उन्होंने हमसे ये सब कहा,
उनकी नज़रें अश्क़ों से भरी।
हम कहना नहीं चाहते थे,
पर हमें ये बात कहनी पड़ी।
"अल्लाह का फ़ज़ल हो! हमें, जानां, तकलीफ़ ज़रा है
दर्द-ए-क़ासिद ज़िन्दान में पड़ा है,
क़लम में हमारी ख़ून भरा है,
काग़ज़ हमारे मैले हो गए हैं,
उस शहर में आ गए हैं हम,
जहाँ हर शक़्स की जगह एक मुर्दा खड़ा है।

तुम नहीं जानते कि अब जागने की तलब होती है।
बरसों से कफ़न सा हो रखा है,
इस जिस्म में कुछ दफ़न सा हो रखा है।
सो रहा है शायद,
शायद पल भर को मुर्दा हो रखा है।
पर तुममें सबसे ज़्यादा जान है।
तुम्हारी जान है, जान, हमारी जान है।
तो कैसे लिखें इस किताब में तुमपर?
यहाँ पन्ने पलटो तो नया शोर होता है,
हर पाँच मिनट में
वैश्या के बिस्तर पे कोई और होता है।
तुम्हारी मोहब्बत को कोठे पे नहीं बिठा पाएँगे,
गोलियों की गूँज में,
तुम्हारे लिए तारीफ़-ए-हर्फ़ कहाँ से ढूँढ लाएँगे?
हमें नहीं पता हम कौन हैं, जानां, पर हम फ़ैज़ नहीं हैं,
काम और इश्क़ साथ में नहीं कर पाएँगे।

बहरहाल, तुम्हारे लिए हमारा इश्क़ पाक है,
मगर रंजिशें दुनिया में लाख हैं।

हवा खा कर, अश्क़ पी कर
कोई सड़क पे सो रहा है,
माँ की लाश के पास,
एक बच्चा रो रहा है।
भाई ने बहन की जवानी देख
अपने पजामे का नाड़ा ढीला किया है,
मज़हब के पसबानो ने
इंसानियत के ख़ून से अपने गेसूओं को गीला किया है।
कश्मीर में फ़ातिमा को कबूतर का इंतज़ार है,
(दर्द-ए-क़ासिद ज़िन्दान में बंद हैं)
दिल्ली में बैठा आदिल अपनी आपी से सुनने को बेक़रार है।
सिरिया में पगलाए चाचा की ज़िंदगी में,
परिवार से भरा आँगन अब नहीं है।
एक वालिद को अपने आशियाने के मलबे में
अपनी बेटी की लाश तो मिली है,
लेकिन बेटी की कलाई पे उसके कंगन की कमी है।
आज़ादी के लफ़्ज़ तहख़ाने में बंद हैं,
इस कफ़स बनी दुनिया में हमारे लफ़्ज़ों को आज़ादी की कमी है।

कल हमारा मुसलमान दोस्त मारा गया,
उसकी मय्यत में ज़माना सारा गया।
सारे शायर मुस्तकिल बैठे थे,
और क़ातिल चीख़-चीख़कर कह रहे थे
कि जन्नत वो बिचारा गया।
जो हम अपनी नज़्मों में चीख़ पड़े,
क़ातिलों को क़ातिल कहा,
रातों-रात हमारे नाम का
फ़तवा निकलता रहा।
कुत्तों को कुत्तों की तरह
ईंट पत्थर खा-खाकर शहादत आयी है,
क्यूँ लिख रहें हैं हम ये सब?
क्या हमारी शामत आयी है?
सांसद में लतीफ़े हैं, बेबुनियादी चोंचले हैं,
और हम लतीफ़ों पे ना हँसे तो, तौबा-तौबा, दोगले हैं?
फहश है हम, उल-ज़लुल लिखती कलम नंगी हमारी है
कैसे लिखें तुमपर? दरगाह की चादर से ढकी रूह तुम्हारी है।

हम दोपहर को आते हैं, जानां
रात को जो हमारे आग़ोश में लेटोगे,
ख़्वाबों के ख़ून से तर हमारा तकिया देखोगे।
हम कैसे लिखें इस गुलिस्ताँ-ए-रेगिस्तां में तुमपर?
स्वतंत्रता दिवस पर माँ ने घर में रहने की अनुमति दी है,
तलवार देश के सिर पे लटक रही है।
जंगल काटे जा रहे हैं,
बर्फ़ पिघल रही है।

फिर भी पता नहीं कैसे यहाँ,
बेख़ौफ़ पूरी दुनिया चल रही है।

इन मुर्दों की बज़्म में तुम्हारा ज़िक्र करना काफ़िराना है,
और ये जो ज़माना है,
जब हम इसे साफ़ कर देंगे,
हर शक़्स को पाक कर देंगे,
कुर्सी पे जब शायर आएँगे,
और सत्ता का इंसाफ़ कर देंगे,
तब तुमपर लिखेंगे।
दर्द-ए-क़ासिद की परवाज़ में
तुम्हारे लिए हमारे अल्फ़ाज़ दिखेंगे।
तुमपे लिखे नज़्म एक आज़ाद जहान में पैदा होंगे,
अपने घर वापस लौटेंगे और रात में तारे देखेंगे।
चाय की चुस्कियाँ होंगी और मुस्कुराते से तुम होगे।

अभी क्रांति कर के बेहताश हो जाने दो,
फिर बड़ी फ़ुर्सत से तुमसे मोहब्बत करेंगे।
और इस क्रांति में कहीं जो हमारा क़त्ल हो गया,
तो किसी नयी शायरा की क़लम से तुम्हारे लिए तारीफ़-ए-हर्फ़ लिखेंगे।
वादा करते हैं!”
जले पाँव लिए हमने उनसे कहा।

मुंबई रिटर्न

Pratik Thakare

जाने को भी कह दिया गया है आखिर
किसी और के घर ज़्यादा देर रुकने पर
जैसे उनकी आँखे बोलती है
अब जाइये।
वैसे ही, जैसे ननिहाल से आए
बूढ़े मेहमान का अचानक
वापसी टिकट करा दिया जाता है,
वापसी का खर्च मेज़बान ख़ुशी-ख़ुशी उठाता है।

मैं बिन बुलाये आया था
तुम्हारे शहर में,
क्या इसीलिए
या किसी का ज़्यादा समय ले लिया मैंने।
महीने के आख़िर की सेल में, समय को
'फ्रेश अराईवल' बताकर सजाया जाता है।
लेकिन ज़्यादा वक़्त होने पर मान लिया जाता है
कि आप बेरोजगार हैं।

खैर, कह दिया गया है तो जाना होगा।
कहीं और नही, बस यहाँ से जाना होगा
यही होता है ऐसे समय में,
कोई जगह नही बचती है जहाँ जाया जा सके
सिर्फ एक जगह होती है
जहाँ से जाया जाता है।
डेस्टिनेशन वाला कॉलम
खाली छोड़ना ही ठीक रहता है।

यह पहली बार नही है
जब जाने को कहा गया है
पहले भी जताया जा चुका है -
अब और ज़रूरत नहीं आपकी।
कह दिया जाए तो सहन किया जा सकता है।
मैं जानता हूँ
क्योंकि कईयों ने किया है
क्योंकि कईयों ने कई-कई बार किया है।

यह कम ही होता है लेकिन
कि कोई चुप्पी से धकेल बाहर करे आपको
कमरे का ताला एक दिन बदल दिया जाये
बस यही मेसेज है। यही नोटिस है।
आपका सामान
खिड़की से बाहर, नीचे की ओर

बरसता रहता है कई हफ़्तों तक
जैसे बरसात टेढ़ी बरसती है लगातार, कभी कभार।

देखे होंगे न,
सड़क पर यूँ ही बैठे, खोए हुए लोग
जिनको देखकर मुंह फ़ेर लेने का फ़रमान
रातों-रात शहर भर में जारी होता है।
वे अपनी मर्ज़ी से नहीं बैठे थे,
गिर पड़े थे, किसी के धकेलने से
और वहीं पड़े रहे
जब तक बरसात के पानी में धुल नही गए।

उन्हें टिकट की ज़रूरत नहीं पड़ी थी
उन्हें ठिकाने लगाया गया था
शहर के रूखे झाड़ू से,
मानसून में जमा हो रहे पानी के साथ,
धकेल बाहर कर दिया गया उन्हें
ताकि बीमारियाँ न फैलें।

धकेले गये लोगों की भी
कोई रेफ्यूजी बस्ती कहीं तो होगी न,
वे लोग जिन्हें पता था
कि फ़िलहाल बस यहाँ से जाया जा सकता है,
अपना बचा-खुचा सब
वहीं पहुँचने की यात्रा में लगा देते हैं।
जो निकलेंगे इन यात्राओं पर, मेरी तरह ही
उनकी यात्रा सफल हो।

मैं पानी की बोतल साथ रखना भूल गया हूँ।
वे सभी जो मेरे बाद निकलेंगे
याद रखें

ज़रूरत पड़ेगी।

पहली पंक्ति

Praveen Choudhary

तुम पहली पंक्ति हो मेरी हर ग़ज़ल की
मेरी शायरी का नूर भी तुम हो
तुम अंदाज-ए-ख़ास हो मेरी हर नज़्म का
मेरे हर गीत का राग भी तुम हो,
तुम मतलब हो मेरी लिखावट का
मेरे हर हर्फ़ का सुरूर भी तुम हो
तुम स्याही हो मेरी कलम की
मेरी हर कविता का गुरूर भी तुम हो,
तुम आईना हो मेरे दिल का
मेरी आँखों की प्रभा भी तुम हो
तुम आवाज हो मेरे हर स्वप्न की
मेरी ख़ामोशी का राज़ भी तुम हो,
तुम हद हो मेरे जुनून की
मेरी ख्वाहिशों की नाव भी तुम हो
तुम सितारा हो मेरे भूत का
मेरे भविष्य की रिवाज भी तुम हो,
तुम मीरा हो मेरे भक्ति रस की
मेरे प्रेम रस की राधा भी तुम हो
तुम तुलसी हो मेरी मनका माला की
मेरे जनेऊ का आराध्य भी तुम हो,
तुम प्रतिबिम्ब हो मेरे चरित्र का
कड़ी धूप की छावं भी तुम हो
तुम सीता हो मेरे राम रूप की
मेरे साहित्य का साज़ भी तुम हो।

खामोश!! कोई सुन लेगा कहीं

Yugal Pathak

सहती है चुप होकर ,रहती है दुख ढोकर
बेटी है लड़की है,खाती है हर रोज़ ठोकर
अत्याचार होते हैं,दुराचार होते हैं
पर कहते है उसको सभी
कहीं किसी को शक न हो जाए
हमारे जुर्म का किसी को इल्म न हो जाये
रिवाजों के घेरे में वो मिटती, पिघलती है
और अगर ,उसकी आवाज़ निकलती है....
शशश....धीरे से.....कोई सुन लेगा कहीं....

मनचाही दंतकथा कोई बुन लेगा कहीं
खामोश!! कोई सुन लेगा कहीं....

शिक्षा मिलना श्राप उसे,जीवन जीना पाप उसे
माँ पर होते अत्याचार देख,
और जीना है करते डर का जाप उसे
अगर बढ़ गयी जीवन मे आगे भी कहीं
तो करना तो चूल्हा चौका है काम उसे
इसी कश्मकश में रोज उसके
जीवन की सुबहो शाम ढलती है
रिवाजों के घेरे में वो मिटती, पिघलती है
और अगर ,उसकी आवाज़ निकलती है....
शशश....धीरे से.....कोई सुन लेगा कहीं....

मनचाही दंतकथा कोई बुन लेगा कहीं
खामोश!! कोई सुन लेगा कहीं....

इज्जत उसकी गहना है,इसी भ्रम में उसे रहना है
लड़के तो होते ही आवारा है,शराफत से उसे खुद को ढके रहना है
कोई इज्जत लूट ले ,तो ठुकराई वो जाती है
अरे "छोटे कपड़े पहनती होगी"
उसके जुर्म की देती दुनिया, ये गवाही है
वह कलंकित नहीं ,पर रोज सीता बन
दे अग्नि परीक्षा का नाम वह जलती है
रिवाजों के घेरे में वो मिटती, पिघलती है
और अगर ,उसकी आवाज़ निकलती है....
शशश....धीरे से.....कोई सुन लेगा कहीं....

मनचाही दंतकथा कोई बुन लेगा कहीं
खामोश!! कोई सुन लेगा कहीं....

रजस्वला बना अपवित्रत कह

कुरीतियों के घेरे में उसको बांधा जाता है
ईश्वर की जब देन है वह भी
तो क्यों उससे यह मानवीय हक लिया जाता है
जिस स्त्री से जन्म लिया है
उसी का बाज़ारो में जब सौदा होता है
जिस्म नहीं ,जान नहीं ,उसके अरमानों का घरोंदा टूटता है
रिवाजों के घेरे में वो मिटती, पिघलती है
और अगर ,उसकी आवाज़ निकलती है....
शशश....धीरे से.....कोई सुन लेगा कहीं
मनचाही दंतकथा कोई बुन लेगा कहीं
खामोश!! कोई सुन लेगा कहीं....

बहु बन जब वह ब्याही गयी,
नई तिजोरी की चाबी बाजार से लाई गई
नुमाइश उसकी हर अदा की रोज़ लगाई गई
मनचाही न होने पर,बदचलन कह वो घर से भगाई गयी
कौन कहता है उसे जीने की आज़ादी नहीं
पर सच है कि जितने हैं उसके कातिल
उतनी उसकी आबादी ही नहीं....
आवाज़ उठती है जब जब, वो कहती है
मुझे इन रस्मों कसमों से आज़ाद करो
मेरी ज़िन्दगी भी ए हैवानो कुछ देर तो आबाद करो
चिंता रहती है उसके 'हितैशियों' को यही
सामाजिक दायरों से ऊपर निकल वो
ख्वाबों की उड़ान कहीं भर ले न कहीं....

अरे बहुत हुआ उसका गुणगान 'विहंग'
तुझे भी उसका 'हितैषी' कोई समझ ले न कहीं
रिवाजों के घेरे में वो मिटती, पिघलती है
और अगर ,उसकी आवाज़ निकलती है....
शशश....धीरे से.....कोई सुन लेगा कहीं....

मनचाही दंतकथा कोई बुन लेगा कहीं
खामोश!! कोई सुन लेगा कहीं....

घर

Archit Aggarwal

पत्थर पे पत्थर टिकाके,
बगल की दीवार के सहारे,
एक घर बनाया था उसने।

हर ईंट में कुछ सपने छुपाये थे,
जो छत की चाहत के बाद आए थे।
चमक-धमक वाले रंग नहीं तो,
गेरुए से ही कोने में हरि बिठाए थे।
खूब हँसते होंगे लोग मगर,
बड़ी मन्नतों से
अपना संसार बनाया था उसने।
पत्थर पे पत्थर टिकाके,
बगल की दीवार के सहारे,
एक घर बनाया था उसने।

अगली सड़क से एक बालिश्त अंदर,
गेंदे की एक क्यारी थी।
छत पे पिघलती धूप और
दीवारों पे थोड़ी कलाकारी थी।
बासठ बरस तक अग्राह्य रहकर,
आज खुद ही खुद को
स्वीकार किया था उसने।
पत्थर पे पत्थर टिकाके,
बगल की दीवार के सहारे,
एक घर बनाया था उसने।

दुनिया का सबसे बड़ा रोग
क्या कहेंगें लोग

Yash Jain

अनेक रोगो का ज्ञान
हर रोग का एक तोड़
लेकिन एक रोग ऐसा जन्मा इस दुनिया में
जिसका ढूंढ ना सका कोई तोड़,
बुरें ख्यालो से भरा ये
डुबाए जिंदगी में आगे बढ़ने का हर मोड़,
और दुनिया का सबसे बड़ा रोग
क्या कहेंगे लोग

जैसे ही उप्पर उठोगे तुम
पत्थर फेकने लगेंगे लोग
लेकिन उठना है तुमको इतना उप्पर
जिससे पत्थर भी ना सके तुम्हे रोक,
रोकने का मकसद केवल तुम्हे गिराना है
तुम्हारी हार में उनकी जीत
उनकी अनेक सफलताओ को पाना है ,
जब तक सुनोगे दुनिया की
नहीं रख पाओगे लक्ष्य पर कदम ठोस
हर कदम पर दिखता रहेगा अंधेरा
टूटते - भिखरते रहेंगे सपने रोज
 बस चलते चलो अपने पथ पे
नहीं बनाना है किसी के तानो को भोज
और दुनिया का सबसे बड़ा रोग
क्या कहेंगे लोग

आगे बढ़ने की राह पर
है लग जाती रोक
क्या लोग कहेंगे, क्या लोग सुनेगे
यही भय रहता मन में रोज़,
दुनिया संग ना चलो तो
जिंदगी बन जाती एक मौत
और दुनिया का सबसे बड़ा रोग
क्या कहेंगे लोग

स्वेटर

Komal Hirani

तुम्हारे ख़यालों की ऊन और तुम्हारे इश्क़ की सलाई!
सब कुछ तो था मेरे पास
फ़िर क्यों पिछली रात काँपने में बिताई?
अच्छा होता जो उठ खड़ी होती और बुनने बैठती एक बिन आकार, बिन शक़्ल कोई स्वेटर। फ़िलहाल।
जब तक कि सीख पाऊँ उन्हें सहेजना, किसी आकार में ढालना।
फ़िलहाल कुछ शुरुआत तो करती।
बेवजह ही सारी रात तकलीफ़ में गुज़ारी।
जो बुनने लगती तो कितना अच्छा होता!
वक़्त भी गुज़र जाता और तुम्हारी कुछेक शिकायतें भी कम हो जाती।
शिक़ायत कि, संभाल नहीं पाती मैं जो तुमने दिया है, जो तुम दे रहे हो।
शिक़ायत कि क़द्र नहीं है।
शिक़ायत कि कब तक बेपरवाह रहूँगी।
शिकायत कि कब तक बस लेती ही रहूँगी।
शिक़ायत कि अथाह दे रहे हो,
शिक़ायत कि संजो के कब रखूँगी?
शिक़ायत कि शिकायते अन-गिनत हो गयी हैं। है ना?
शिकायत कि कब तक बिना कुछ किये बस सुनती ही रहूँगी।

अच्छा होता जो बुनने लगती, तुम्हें धीरे धीरे ही सुनने लगती।
अन-गिनत शिकायतों के दरख़्तों से,
शिकायतों का एक-एक फूल चुनने लगती।

पर अफ़सोस कि गुज़र गई वो रात भी।
एक और रात की देरी हो गई तुम्हें समझने में।
जानती हूँ दर्द में हो और शिक़ायत की भीड़ में एक और शामिल हुई पर जो तकलीफ़ पिछली रात हुई उसे भी तुम न भाँप सकोगे।
जो भाँप जाओ तो बताना या ख़ुद ही समझ लेना कि क्यूँ नहीं बुन पाई पिछली रात।
क्यूँ खामखां गुज़ार रही हूँ हर रात।
क्यूँ बिन आकार, बिन शक़्ल ही बुनना है।

तब तक चलते हैं हम।
तुम्हारे ख़यालों की ऊन और तुम्हारे इश्क़ की सलाई से।
बिन आकार, बिन शक़्ल का एक स्वेटर बुनने की एक और कोशिश में।

सपने और संघर्ष

Nishu Mishra

सपने पूरे न होने का रहता है खोफ,
पर सपने देखने का सबको है शौख॥

कभी बन्द तो कभी खुली आंखों से देखा,
किसी ने की मेहनत तो किसी ने सब किस्मत पर फेंका॥

कोई खुद से हैं नाराज,
किसी को लगती है अपनी किस्मत बकवास॥

दुसरो को देख कहते है लोग, क्या
किस्मत है उसकी,
कोई वो मेहनत नहीं देखता जिसने बना दिया था उसे सनकी॥

जो लगती थी प्यारी,
उसे थी उसने नकारी,
सुख से दुरी बनाई ताकि न हो दुःख की बिमारी॥

त्यागा बहुत कुछ ऐसा जो लगता था अपनों जैसा,
यही है संघर्ष का खेल, जब नहीं होता सुखों से मेल॥

आज खुशीयों ने जिसे अपनाया,
उसने था कभी दुःखो से हाथ मिलाया॥

सपनों का पीछा करो, संघर्ष पिछे आएगी,
सुख रहे न रहे, हिम्मत जरुर साथ निभाएंगी,
उसी हिम्मत का हाथ पकड़, संघर्ष की सीढ़ियां चढ़ीं जाएगी॥

सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते, अपने सपनों से भेंट हो जाएगी॥

ये घर नहीं ये तो हॉस्टल है

Sarani Roy

ये घर नहीं ये तो हॉस्टल है
यहाँ लेट नाईट पार्टी अल्लाव है
एग्जाम केे टाइम फूल वोलौम म्यूजिक अल्लाव है
गला फर केे चिल्लाना दूसरों का नींद हरम करना अल्लाव है
ये घर नहीं ये तो हॉस्टल है |

यहाँ बंदिशों की ना ही कोई जंजीर है
सब अपने अपने मर्जी केे मलिक है
यहाँ दोस्ती भी टीमो मैं बाटी है
और लड़ रही एक दूसरे की खिलाफ है
शोर हल्ला झगड़ा यहाँ का शान है
ये घर नहीं ये तो हॉस्टल है |

ये कहानी नहीं है बस अपने हॉस्टल की
ये कहानी है उन अफतो की
जिसने बाट दिया दोस्तों को अपने ही खिलाफ है
जो गुनेहगार है पुरे हॉस्टल की
पर झेल रहे बदनसीब वाले है
ये घर नहीं ये तो हॉस्टल है |

खाना खाने का यहाँ कोई सही टाइम नही
दिन रात का यहाँ कोई ठीक नही
यहाँ रात को सोने का कोई सिन नही
और दिन मैं सोने का कोई चांस ही नही
सुनो रे सुनो ये घर नहीं ये तो हॉस्टल है |

गुफ़्तगू ... ख़ुद से!

Dr Priti Chahar

वक़्त रोज़ मेरी बाल्कनी पे जैसे ठहर जाता हो

शाम अक्सर मुझसे मिलने वहाँ आती है

मेरी इजाज़त के बिना उसका डूबना नामुमकिन था

अाखरी किरण मेरे कमरे की खिड़की पे आहट करती

जैसे कहती हो कि अब मैं चली , कल मिलूँगी

फिर यही जब तुम आइने में बाल सँवारोगी

और मैं तुम्हें निहारूँगा जी भर के

तुम्हारी चाय के प्याले को चखकर ही मेरा दिन ढलता है

कहकर सूरज डूब जाता है आहिसता आहिसता

मेरी ज़िंदगी का सूरज जब भी डूबेगा

ऐसे ही होगा वो मंज़र भी

बहुत ख़ूबसूरत सिंदूरी सा

हसीन शाम दुल्हन बनी हो जैसे

और बेख़ौफ़ बेधड़क जाना होगा

एक नये अंजान सफ़र पर

बिना किसी की इजाज़त लिये ।

गहराते जा रहे दाग

Raj Sargam

बहुत जल रहा है ये नाज़ुक सीना आज
रख इस पर गर्म सलाख गया कोई भाग
नहीं गिरती बर्फ, क्यों रूत बेईमान सी
मिले भी कैसे ठंडक, गहराते जा रहे दाग

बहा ले गई महक, वो हवा बेगानी, सयानी
हो गया खाक अल्हड़ से फूल का पराग
हो रही है तलाशी खामोशी में शोर की
खो चुका है शोर, है हर जानिब अज़ाब

खेल ने तकदीर के डाला है अचम्भे में
रखें कहाँ कदम, है हर कदम पे अलाव
मेरे खुदा रहमत से तू अपनी कर कमाल

भेज कर दरिया कोई, कर दे शांत ये आग।

प्यार की परिभाषा

Avantika Singh Sengar

"प्यार" यूं तो ये ढाई अक्षर ,

हैं कहने को, पर काफी होते हैं खुश रहने को।

ज़माने बीत जाया करते हैं,

कभी तो इसे खोजने को,

तो कभी एक पल ही काफी होता है इसे पा लेने को।

पर , इस प्यार का तजुर्बा है, सबका अपना।

कभी तो है ये कोई अपना, तो कभी ये है एक हसीन सपना।

कभी इसमें है सफ़र कसमों और वादों का,

तो कभी है ये पिटारा, कुछ खट्टी कुछ मीठी यादों का

कभी तो दर्शन इसका है, चंदा और सूरज में,

तो कभी है आकर्षण इसका किसी भोली सूरत में।

कभी तो ये है,

दर्द का सागर तो कभी खुशियों भरी है, ये गागर।

कहीं तो है ये कृष्णा सा चंचल,

तो कहीं राधा सा है ये कोमल।

कहीं है इसका प्रतीक इमारत,

तो कहीं है कोई लिखी इबारत।

यूहीं प्यार की सबकी अलग परिभाषा ,

पर इसकी है अपनी भाषा।

कहीं तो पढ़े - लिखो को भी समझ ना आती,

तो कहीं ये जीवों में भी है मेल कराती।

जोड़ते हुए

Shalini Pandey

कभी मकान जोड़ते

कभी दुकान जोड़ते

कभी दहेज जोड़ते हुए,

अनेक पिताओं की

उम्र यूँ ही बीत जाती है

मेहनत में शरीर तोड़ते हुए।

ढलती यारियां

Avani Bhatia

ढलते सूरज के संग ढल गई हमारी यारियां
मिट गए रिश्ते सारे, रह गई सिर्फ उनकी निशानियां।
अलविदा भी ना कहा
ऐसे भी हो क्या तुम रुसवा,
भिनी भीनी यादें लेकर अब मैं जाऊं कहां।
दो कदम जो अलग चले नहीं
वो सौ कदम क्यों दूर है,
मुड़के एक बार देखा नहीं
इतना भी क्या मजबूर है।

जिस दोस्ती के लिए कभी जीने को
कभी मरने को तैयार थे,
आज उन्हीं दोस्तों से, उन्हीं यारों से
लाख तुम्हे फरियाद हैं।
शायद मिल गए हैं तुमको यार नए
साथी नए या प्यार नए,
तभी भूल गए उन पुरानों को
जो हर बार थे तुम्हारे साथ खड़े।

रोए जब तुम तो हसाया जिसने,
खोए जब तुम तो रास्ता दिखाया जिसने,
उलझे जब तुम तो सुलझाया जिसने,
उखड़े जब तुम तो मनाया जिसने,
उन्हीं यारों से रास्ते आज तुमने मोड़ लिए
दिल के, प्यार के, रिश्ते सारे तोड़ लिए।

कशमकश

Venuka Anand

"क्यों इतना धीरे समझती हो?
क्या वक़्त की कदर नहीं?"
कहता है दिमाग बार बार ।

"हां, कदर तो है,
पर इंसानों से ज्यादा नहीं ।"
बहाना यही बनाता है दिल बार बार ।

"पछताओगी, राह में पीछे छूट जाओगी ।"
कहा दिमाग ने ।

"नहीं, कभी नहीं " व्याकुल हो कर कहा दिल ने ।

पर दोनों ही जानते थे, की सच क्या है,

"ये दुनिया तो एक छलावा है,
और, मोह माया एक डोर,

चले गए तो लौट के न आएंगे,
अगर लौटे तो पछतावा साथ लाएंगे,

डोर मजबूत है, वो लालच का सूत है,
क्योंकि, छलावा ही संतोष है ।"

अनुपयुक्त सर्वश्रेष्ठ

Ankita Singh Jaiwar

ख़ुद के अंतर्मन से कैसा ये सवाल है,
अनेक दिशाओं से उठता कैसा ये भूचाल है,
आप के अक़्स से ना हूँ आज ख़ुश मैं,
सबसे अच्छा सबसे प्यारा,
लेकिन ख़ुद को देता रहा कष्ट मैं।

खुली सी हूँ किताब पर, वह पन्ना स्वयं गुप्त है,
कितनी बेड़ियाँ जकड़े हुए,
की दर्द मल्हम से भी आम है, मगन हूँ इतना आज,
लेकिन फिर भी वो टीस है चुभती,
सबसे प्यारा सबसे अच्छा,
लेकिन स्व से हूँ अनजान मैं।

सुख जो था मृग तृष्णा,
जल था ही नहीं कैसे था मिलना, धर लेने का मोह,
जीवन का सारथी बन गया,
इसी आशा के आधार पर, खंगर मन गढ़ रहा था मैं,
सबसे अच्छा सबसे प्यारा,
लेकिन हूँ आत्मघात्य प्यास मैं।

अस्पष्ट अनुमोदन देकर,
संशय को रंग लेप दिया मैंने,
तू क्या समझ पाएगा मुझको,
जब ख़ुद से ही छल किया मैंने,
जीवन झूठ लगने लगा,
और सच्ची दस्तक कि गूँज,
हर पल दास बना रहा था मैं,
सबसे अच्छा सबसे प्यारा,
लेकिन ख़ुद को हर रहा था मैं।

बेध गया हूँ अब बन दर्शक,
तुझसे खुदसे सबसे मैं,
निराश हताश प्रसन्न मगन,
हर रस जी चुका हूँ,
ख़ुद का अर्क ना पी पाया मैं,
हाँ था! हाँ था मैं उपयुक्त,

लेकिन अब सृजन ना कर पाउँगा,
स्मित छल की क्रीड़ा मैं,
सबसे अच्छा सबसे प्यारा,
लेकिन हूँ रंगमंच की मूर्त मैं।

आंसु

Aakanksha Singh

आज अचानक सामने आ कर वे पूछने लगे मुझसे मुस्कुरा कर,
कैसी हो ?
क्या खुश हो?
क्या यही वजूद है तुम्हारा?
या छलावे का चादर ओढ़ तूने खुद को है सबसे छुपाया?
अनमनस सी हो,करवट बदल कर..
अपनी आँखें जो मैंने मूंदी..
तो आँखों के किनारे से उन्हें फिर आते देखा..
और झुंझलाकर उन्हें नज़रअंदाज़ किआ..
पर वो ठने थे मानो हठी बच्चों की भांति आज ज़िद पर अड़े थे !
मैं बोली हां खुश हूँ मैं, बेहद खुश..
इता कह कर मैंने सामने रखे आईने में खुद को देखा..
पर आँखों के कनखियुं से वो अब भी झाँख रहे थे..
और बेपाक बेपरवाह मेरे पास आ रहे थे !
मानो मुझे सोचने पर मजबूर कर रहे थे-
की आख़िरकार क्यों ज़िन्दगी के सफर में यूँ ही चलते चलते,
रिश्ते कभी इस कदर हैं बदलते,
की अपने पराये और पराये अपने से हैं लगने लगते?
आख़िरकार क्यों कल तक जो साथ चलने का वादा थे करते,
आज हमे देख वो मुँह फेर लेते?
क्यों कल तलक जो दोस्त हमेशा साथ थे रहते,
आज अनजान बन अपने रस्ते बदल लेते?
अपने प्रयत्न में शायद आज वो सफल थे..
क्यूंकि कही न कही मैं टूट चुकी थी,
बरसो के झूठ को आज महसूस कर रही थी..
इस समाज के फरेब को मैं समझ चुकी थी,
मैं फूट पड़ी..
सब्र और आंसुओ की बाँध को आज ना रोक सकी..
मेरा मन हल्का और आँखें खाली हो चुकी थीं..
पर तकिये की गिलाफ़े ये बता रही थीं..
की वो जा चुके थे!
की वो जा चुके थे!

पानी की प्यास

Mamtamayi Priyadarshini

संतप्त है तन, उद्विग्न है मन,
चहुं ओर अगन, तप रहा गगन
तुम तृषित हो मुझे बुलाते हो , मुझे पीकर तृप्ति पाते हो,
मैँ आकन्ठ तुम्हे भर जाता हूँ ,और अमृत पान कराता हूँ,
पर आज सुनो फरियाद मेरी, तुम समझो पीडा औ व्यथा मेरी

तुम क्षणिक सुखो की चाहत में, मुझको विषपान कराओ ना मैं तेरे रंग मे रंगता गया ,
अब मेरे रंग, रंग जाओ ना
मैं पानी हूँ, पानी ही रहूँ , तुम मुझको मृतक बनाओ ना
मैं तेरी प्यास बुझाता हूँ तुम मेरी प्यास बुझाओ ना

तुम प्यार से मुझे सहलाते हो, मैं गंगा-जल सा उमडता हूँ
तुम मीठी बात सुनाते हो, मैं कलकल झरने सा बहता हूँ
तुम घर का कचरा मुझमे मिला, खुद पाक़ साफ हो जाते हो,
तुम कारखानो का सारा मल, बड़े हक़ से मुझमे मिलाते हो
जब मेरी ज़रुरत आन पड़ी , पानी ट्रीटमेंट प्लांट लगाते हो!

तुम दग्ध मुझे कर ज़ाते हो, फिर किरणो से भी जलाते हो,
तुम रसायन मुझमे मिलाते हो , मिनरल शोषित कर जाते हो

तुम मुझको शुद्ध बनाने में, कही खुद रोगी बन जाओ ना,
मैं तेरे रंग मे रंगता गया , तुम, मुझे बदरंग कर जाओ ना
मैं पानी हूँ, पानी ही रहूँ, तुम मुझपे सितम अब ढाओ ना,
मैं तेरी प्यास बुझाता हूँ, तुम मेरी प्यास बुझाओ ना

मैं तेरे आतंक से डर सा गया , धरती के गर्भ में छुपता गया,
तुम ढुँढ़ मुझे ले आते हो, बोर-वेल से मुझे बुलाते हो
मैं दर्द से अश्रु बहाता हूँ, जल खारा, तुम्हे पिलाता हूँ ,
अब हाथ जोड विनती है मेरी , चंद सांसो की गिनती है मेरी

मुझसे ही तुम्हारा सृजन हुआ ,अब जल-प्रलय की स्थिति बनाओ ना,
अगली पीढ़ी की नजरो में , शर्म से पानी-पानी हो जाओ ना
मुझमे निर्झर का तत्व रहे ,तुम ऐसा कुछ कर ज़ाओ ना,
मैं पानी हूँ, पानी ही रहूँ , तुम मुझको मृतक बनाओ ना,
मैं तेरी प्यास बुझाता हूँ, तुम मेरी प्यास बुझाओ ना

साजिशें

Sneha Sharma

बेशर्म आँखो की साजिशें कुछ ऐसी हो गई,
बंध हो, फिर खुलती, झपकती भी,
मगर बंध आंखो के पीछे तुम्हारे ठिकाने सी हो गई,
तुम पास तो हीरे सी चमक, तुम दूर तो मोतियों सी बरसाते हो गई,
बेशर्म आँखो की साजिशें कुछ ऐसी हो गई।

बेखौफ साँसों की साजिशें कुछ ऐसी हो गई,
हवाऔ की महक मे ढूंढें ईत्र तेरा,
सांसो में घुलता मेरी, वो तेरा ऐहसास,
हवन, धूप धुंआ, खुश्बू भीगी माटी सी हो गई,
बेखौफ साँसों की साजिशें कुछ ऐसी हो गई।

बेरहम लबो की साजिशें कुछ ऐसी हो गई,
नाम तेरा अखण्ड, माला मोती सी हो गई,
लब से तेरे सजे, वो आह जख्म की,
वो बूंदे रक्त की, फूलों पर जलधारा सी हो गई,
बेरहम लबो की साजिशें कुछ ऐसी हो गई।

बेबाक धङकनो की साजिशें कुछ ऐसी हो गई,
अपने ही दिल से दगाबाजी सी हो गई,
डोर मे बांध चलें तुम्हारे दिल को खुदशे,
और तुम खुदा हमारे, तुमसे बंदगी सी हो गई,
बेबाक धङकनो की साजिशें कुछ ऐसी हो गई।

कुछ तो हिसाब होना चहिए

रश्मि गांधी

चेहरे पर हज़ारों चेहरों का, कुछ तो हिसाब होना चाहिए,
आँखों के अन्धो के लिए भी, कोई हिजाब होना चाहिए।

रुख़सत सहर करती आयी है, मयखाने में डूबी शामों को
घूँट घूँटकर जहर पीने का भी , कोई तरीक़ा होना चाहिए।

मलने को मरहम ज़ख्मों पर, हक़ीम ढूंढ रखे है कई यहां,
ख़ंजर सी चुभती ज़बान का, कुछ तो इलाज होना चाहिए।

दिखाने दुनिया को , तेरी चौखट को अलविदा कह भी दे,
रूह को जिस्म से मिला दे,तुमसा वो दिवाना होना चाहिए।

बुलंदियों का आसमां छूकर भी,सुकूं मिला ना इक पल को,
तस्कीन-ए-अना हो जाए,दिल में ऐसा दरबार होना चाहिए।

खुद की नज़रों से परखा तो, भगवान ही निकले सब यहां,
बेईमानों की नगरी में रहकर भी, साफ इमान होना चाहिए।

टूटने ही है वो रिश्ते भी, रफू करते रहे जो रेशम की डोर से
जोड़े जो रब से,कलाई पर वो मन्नत का धागा होना चाहिए।

चाय

Atal Kashyap

चल रहे मन के अंतरदवंद में
एक रोज चाय बना रहा था,
अपने में ही खोया पतीली में
उफनती चाय निहार रहा था,
मनःस्थिति भांपती उफनती चाय
तपाक से बोली –

जरा-जरा सी बात में
नर, तूॅ क्यों घबराता है,
मेरी कहानी से तूॅ क्यों
सबक नहीं ले पाता है,
मुझे भी दूसरों के लिए
रोज ही अंगीठी पर चढ़ाया जाता है,
इसके बाद मिठास के लिए
चीनी से हाथ मिलाया जाता है,
फिर चायपत्री डालकर
सुख-दुख जैसा काढा बनाया जाता है,
फिर दूध मिलाकर मेरे जीवन के
कड़वेपन को हर लिया जाता है,
फिर रूप निखार के लिए
बार-बार अंगीठी की ऑच से
उफान दिया जाता है,
अंत में मेरी जड़ों से छानकर
मुझे विरक्त किया जाता है,
इतना भोग कर भी
कप में अपनी सुगंध से तुम्हारी
चाह बढ़ाती हूँ,
इसलिए जीवन के आम और आतिथ्य-सत्कार में
मै ही पूँछी जाती हूँ ।

मेरे जीवन साथी

Abhishek Bajpai

कभी आग सा जल जाता हूँ।
कभी हवा सा चल जाता हूँ।
कभी बरसता हूँ मेघों सा ,
कभी सूर्य सा ढल जाता हूँ।

तुझको पाने की ख़्वाइश में ,
कभी -कभी मैं मचल जाता हूँ।
करने को दीदार तेरा मैं ,
कितनी गलियाँ चल जाता हूँ।

तुम सा जीवन साथी पाकर ,
जीने का आनन्द मिला है।
प्रेम -सुधामृत पान का सुख ,
भी मुझे अपार अनन्त मिला है।

साथ चलो तुम हरदम मेरे,
पास रहो तुम हर पल मेरे।
बस इतनी सी ख़्वाइश में ,
ये दिल सौ बार पिघल जाता है।

तुझसे दूरी की बातों से ,
थोड़ा थोड़ा सर जाता है।
देख के तेरी आँख में आँसू ,
समझो पूरा मर जाता है।

मेरे जीवन साथी तुम हो ,
मेरे ह्रदय निवासी तुम हो।
मेरी हर एक कविता का रस ,
हर एक गीत के वासी तुम हो।

कुछ कहता पानी

Kunwar Digvijay

मुझसे कुछ है कहता पानी
उम्रों के सितम ये सहता पानी
कलकल कलकल बहता पानी
ये कैसा इश्क़ है वक़्त से इसको
के इसके धारों से क़दम जोड़े
तसव्वुर-ए-वस्ल में रहता पानी
कलकल कलकल बहता पानी
गोल कंकरों को छूके गुज़रता
आरज़ू-ए-सुकूँ-ए-दिल लिये
किनारों से गुफ़्तगू करता,
पत्थरों से टकरा के, हवा का ज़ायक़ा चखता
लहरों के सफ़्हे पलटता पानी
सुबह सुफ़ैद, साँझ सुनहरा
स्याह, है दिन जब ढलता, पानी
ये कैसा इश्क़ है वक़्त से इसको
के उसके हसीन रंगों की
मुसलसल उधारी में रहता पानी
समंदर में डूबता आधा सा सूरज
जैसे आधी रेज़गारी ये कहता पानी
कलकल कलकल बहता पानी
वक़्त से इश्क़ करता है लेकिन
उसके दायरों में अब ढहता पानी
कलकल का कल मालूम नहीं
है आज मगर इक दास्ताँ सुनानी
दरिया, नल, झीलें, तालाब,
इनके ख़यालों की ज़बानी
क्या ख़यालों में बस, अब रहता पानी?
मद्रास के मदरसे प्यासे क्यूँ है
पाँचों आब उदास से क्यूँ है
क्यूँ है मायूस पत्ते और डाली
हरियाना की वो हरियाली
दिल्ली में यमुना, हिनडन में काली
नदियाँ क्यूँ मैलीं या ख़ाली?
शहर, गाँव बिसरी बदहाली
वो कलकल की मीठी सी बानी
छलकता जल, बलखाता पानी
सुनता हूँ उसकी मैं ग्लानि
ये कैसा इश्क़ है वक़्त से इसको
के उसकी तरह रफ़्तार पकड़ ली
गहराई मगर इक याद पुरानी
कलकल कलकल बहता पानी
कल, कल, कल तक बहता पानी।

रेत के टीले

Soumya Rathee

तुम मुझको यूं देख समझ ना पाओगे,
गहराई में रहता हूँ खोया मैं अक्सर,
सीधे - सादे सपनों वाला सीधा - सा मैं,
रह जाता हूँ ख़ुद ही अपना सपना बन कर,
तुम रहते हो महलों में हो कर अपने गुम,
मैं सड़कों पर गुमसुम हो कर सो जाता हूँ,
जाने क्या - क्या ख़्वाब हसीन तुम्हारे हैं,
पर सड़क किनारे रेत के टीले मेरे हैं।

कोई गुड्डा - गुड़िया लाने को जी चाहे ना,
जो रूठें वो तो कोई उन्हें मनाए ना,
जिस घर में बैठे हो वो घर बनताब हूँ मैं,
पर अपने लिए अब ऐसा कुछ ना चाहता हूँ मैं,
मैं चला गया तो ये टीले तन्हा हा जाएंगे,
जो गुज़र गया है ये भी वो लम्हा हो जाएंगे,
क्या मालूम क्या ग़म किस घर को घेरे है,
पर सड़क किनारे रेत के टीले मेरे हैं।

मेरा बचपन है जो ख़ुद ही मुझसे खेल रहा है,
ना मेरा सपनों से इतना कोई मेल रहा है,
कभी बीच में मैं भी सपने देखा करता था,
के इक दिन उस ऊंचाई को छू जाऊंगा मैं,
कोई ख़यालों में मुझको भी लाएगा और,
किसी का सपना बन कर फिर से आऊंगा मैं,
जानूं ना इस दुनिया में जो चेहरे हैं,
पर सड़क किनारे रेत के टीले मेरे हैं।

मैंने इन टीलों को समझा है, समझाया है,
मैंने इनको सँभलते देखा है, बनाया है,
मैं जानता हूँ के इक दिन ये ढह जाएंगे,
और पीछे बस माटी - कंकड़ रह जाएंगे,
पर पास रहे कुछ, तो ही हो ऐसा तो नहीं,
जब जो चाहे सब वो ही हो ऐसा तो नहीं,
जाने कितने और इन टीलों संग सवेरे हैं,
पर सड़क किनारे रेत के टीले मेरे हैं।

दो सहेलियाँ

Anuj 'Saraj' Verma

बार-बार मिलती रहीं बिछड़ती भी रहीं
मोहब्बत एक दूजे से बे-इन्तहा करती रहीं

हर साँस जो वो आती वो चली जाती
मुलाकातें इतनी करीबी बरसों यूँही चलती रहीं

हिज्र की रात तो मगर नसीब में तराशी थी
गिनती साँसों की एक दिन खत्म होती रही

ज़िंदगी जो गई उस रोज़ ना फ़िर लौटी
मौत ख़ामोश इल्ज़ाम लोगों के सहती रही

मेज़बान कुछ ज़मीन कुछ ज्वाला से जुड़ते रहे
खोज में ज़िंदगी की वो फिर से निकल पड़ी

माझे बाबा

Khushbu Jain

माझे बाबा

आयुष्य तुम्च तुम्चि ठर्वा
अस्स म्हनाई चे माझे बाबा,
हाठात हाठ दह्रूण चाल्ट पेषा,
तुम्ही तुम्च एक्तानी चाल्ट जा।
अस्स म्हनाई चे माझे बाबा,

रोज संध्या काली ल्वकर यै,
रोज स्काली ल्वकर ऊठां पेषा,
बरोबर जैवन केल्स का,
अस्स म्हनाई चे माझे बाबा,

एक्च स्वपनं एक्च म्हन,
तेंचा मूली च स्वता च संसार वाहनं खुप गर्जित अस्त,
घर्चा लोकांना सुकरूप ठेवे असी सून बनुन दाक्का पेषा,
घरा च बाहेर पाउल ठेवथ जा,कामा वर लक्ष ठेवथ जा,
अस्स म्हनाई चे माझे बाबा,

झोप मोड़ करता स्वताची,
आझारी असून तरी दाख्वत नाही,
सद्धय गाँव माझा मागे फीर्त बस्या पेषा,
माझा पाठी उभ्ह राहता माझे बाबा महंता,
माझी मूल्गी माझः अभिमान आहे।
असे आहेत माझे बाबा।

चल देना

Ruchi Jain

राहों में कांटे आए तो क्या
तू फूल समझकर चल देना
कोमल सी लगेगी तुझे यह जिंदगी
तू धूल समझकर चल देना
लगेगी मुश्किलें पहाड़ों सी
तू सड़क समझ कर चल देना
आसान न लगे अगर जिंदगी
उसे एक खेल समझ कर चल देना
मजेदार ना हो अगर कोई पड़ाव
इम्तिहान समझकर चल देना
जिंदगी तो आज है कल नहीं
तू इतिहास समझ कर चल देना
आंसू अगर आए आंखों में दर्द के
तू मन की सफाई समझ कर चल देना
अगर हो बुरा कुछ जिंदगी में
कान्हा की इच्छा समझकर चल देना
भूल हुई हो जो ग्लानि दे
तू उसे एक बुरा सपना समझकर चल देना
हो अगर मन में गुस्सा
उसे बस लू समझ कर चल देना
कोई अगर साथ ना हो तो
अपने आप का साथी बन कर चल देना
माथे में सीकन हो तो गजनी बनकर चल देना
मां की याद आए तो बच्चा बनकर चल देना
चल देना मेरे दोस्त
इस जिंदगी के सफर में रुक गया तो तू नहीं
और तुझे रोक दे ऐसे तो हम नहीं....

निशब्द

Khushboo Tangariya

एक अर्से के बाद मिल रही थी तुमसे,
कदम बढ़ ज़रूर रहे थे,
पर मैं निशब्द सी थी,
शिकायतों की पर्ची तुम्हें बतानी थी और प्यार तो
मैं आँखों में सबसे छुपा के लाई थी,
इसीलिए तो काला रंग ओढ़ के आई थी,
जब तू, सामने आया तो तेरी आँखों ने मे
री आँखों को घेर के कहा,
बस! यूँहीं रहो मेरे पास मेरे सामने
और अधरों से कह दो ज़रा ख़ामोश रहे,
क्योंकि, हमारी मोहब्बत तो इन आँखों में बसती है,
जानती थी, सादगी में लिपटी मेरी खुश्बू
तुम्हे अक्सर पसन्द आया करती थी,
मेरी भीगी लटैं जो तुम्हे उलझा दिया करती थी,
वैसी ही संवर के आयी थी,
एक अर्से के बाद जो मिल रही थी
और फ़ास्लें जो सिमट के भी नही सिमट रहे थे,
प्यार तो आँखों में, मैं भर लाई थी,,
पर इज़हार- ए- बयां को इंतेज़ार तेरा था,
मुझे बताना था,
तुम्हे की किस तरह कटें वोह दिन तुम्हारे बिना,
पर … निशब्द हैं! दोनों अब,
ये दिल जानता है, मोहब्बत तो अब भी वही है!
हालात ये है की दुनिया के डर से
इश्क जताना छोड़ दिया,
याद है मुझे वो, आख़िरी अलविदा जब जाते-
जाते तुमने मुझे खींच के बाँहों में भरा था,
बस्स! वंही थी मेरी खुशी, क्योंकि,
वंही तुम मेरे से थे और मैं सिर्फ तुम्हारी,
बहुत मुश्किल था खुद को तुम से दूर करना,
कभी फ़ुर्सत मिले तो मेरी ख़ामोशी को पढ़ना,
तो शायद मालुम हो जाये,
दूर तो मैं हो गयी ,
लेकिन दिल तो वंही तुम्हारी मेज़ पे छोड़ आई हूँ मैं,
तुम्हारे उस कमरे में,
तुम्हारे तकिए के पास रख आयी हूँ मैं,
मेरे पास अब कुछ नहीं सिवाए तुम्हारी यादों के
एक अर्से के बाद मिली थी तुमसे!

कुछ समझ नहीं आता

Anjali Mundra

हैं क्या गलत क्या सही कुछ समझ नहीं आता,

क्या करूँ क्या नहीं कुछ समझ नहीं आता..

गुज़र गया कारवां हम देखते रहे गुबार,

हैं कैसी ये बेबसी कुछ समझ नहीं आता..

रूह के बहाने सब जिस्म आज़मा गए मेरा,

कैसी हैं आज की दिल्लगी कुछ समझ नहीं आता..

मैंने सोचा अपने मुझे भीड़ में भी पहचान लेंगे,

दिखे उन्हें सब महजबीं कुछ समझ नहीं आता..

देखा हैं लोगों की आँखों में धोखेबाज़ी साफ़ झलकती हैं,

मगर हैं लफ्ज़ बड़े हसीं कुछ समझ नहीं आता..

तन्हा हुए हैं हम चले जाने से किसी के,

या खुद की ही हैं कमीं कुछ समझ नहीं आता..

अफसोस

Rashi Choudhary

इस दुनिया में अफसोस ही अफसोस है,

यह बात बिल्कुल ठोस है|

किसी को पढ़ न पाने का अफसोस है,

तो किसी को परीक्षा में कम अंक पाने का अफसोस है|

किसी को देश के बाहर न जा पाने का अफसोस है,

तो किसी को देश में न रह पाने का अफसोस है|

किसी को पैसे न कमाने का अफसोस है,

तो किसी को खर्च न कर पाने का अफसोस है|

किसी को मित्र न बनाने का अफसोस है,

तो किसी को मित्र को खोने का अफसोस है|

किसी को कम जीने का अफसोस है,

तो किसी को खुलकर न जीने का अफसोस है|

अफसोस हर किसी के जीवन में होता है,

फर्क सिर्फ इतना है कि कोई लड़का है,तो कोई रोता है|

जाली मित्रता

Ananya Karn

कमियों के चर्चे हुए हज़ार,

इसलिए तारीफ़ों को रास न आए।

दिन-रात ज़हर घोल बैठे थे जो,

उन्हें एहसास के बाद कोई अपना नज़र न आए।

जो करे तारीफ़ बिन मतलब वही अपना हो जाए,

जो गिना दे कुछ गलतियाँ सही वो नज़रों में ग़ैर हो जाए।

फ़िक्र जो जताकर है करे वो ख़ुदका बन जाए,

और जो करे फ़िक्र बिन बताये वो अपना भी पराया हो जाए।

साथ जो कुछ पल दे स्वार्थ में उस पर विश्वास हो जाए,

मगर हर पल साथ जो दे उसकी एक गलती पर सारे एहसान भुला जाए।

रिश्तों को जो अपना है माने वही आजकल शत्रु बन जाए,

जो स्वार्थ में करे सहायता वही मित्र है कहलाए।

Wingword Poetry Competition

Sponsored by Delhi Poetry Slam, we have hosted several poetry competitions over the last few years to encourage people to make writing a habit and an art that needs to be sought. The competitions are open to all Indian nationals across all age groups. Anyone with the interest in writing can participate.

Wingword Prizes runs an annual poetry competition that accepts submissions for four months every year. Prizes are awarded to those with exceptional talent in writing and a cumulative sum of INR 5 Lakh is distributed among the winners of the competition each year. The first prize winner receives INR 1 Lakh Rupees and an exclusive book publication contract. Second prize winner receives INR 50,000 and the third prize winner receives INR 25,000. All other winners of the competition receive INR 10,000 each and publication in an exciting poetry anthology.

In 2019, Wingword introduced two more categories of prizes- Children's Poetry Competition and Regional Language Poetry Competition. Winning Prizes worth 2 Lakh were given to the winners of these categories.

Wingword also organises other competitions such as short story and essay writing competition.

Read Other Books by Wingword

How To Love A Broken Man by Vancouver Shullai

How to Love a Broken Man is a collection of thoughtful and honest poetry exploring varied shades of life.

Author: Vancouver Shullai is the winner of Wingword Poetry Prize 2017. He was born and brought up in the Khasi community of Shillong, Meghalaya.

Girlhood by Eshna Sharma

Girlhood is a collection of vibrant teenage poetry along with delightful illustrations, capturing the fluidity of transitioning from one phase of life to another.

Author: Eshna Sharma is the winner of Wingword Poetry Prize 2019. She won the prize when she was only 16 years old, becoming the youngest winner of the prestigious national competition. Eshna lives in Lucknow with her family.

Freedom of Awaaz by Kunwar Digvijay

Freedom of Awaaz is a poetry anthology which pushes the frontiers of exploring a nation's ongoing struggle to freedom.

Author: Kunwar Digvijay is the winner of Wingword Poetry Prize 2018. He lives in Delhi with his parents and younger sister.

www.wingword.in

राग पलाश

विंगवर्ड प्रतियोगिता की सर्वोच्च काव्य रचनायें

फूलों से लदे पलाश वृक्ष के झुंड को आप देखेंगे तो लगेगा की सारे जंगल में आग लग गयी है| पर अग्नि का भ्रम पैदा करने वाला ये सुंदर वृक्ष दरअसल, बसंत ऋतु के आगमन का सूचक है। गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर ने भी इस वृक्ष की कुछ ऐसी ही व्याख्या की और इस फूल को शांति निकेतन में मनाए जाने वाले बसंत उत्सव का अभिन्न अंग बनाया।

विंगवर्ड प्रतियोगिता की चयनित हिंदी कविताएँ भी पलाश की तरह हैं।

इन कविताओं के नवीन विचार, अद्वितीय दर्शन एवं मानव भाव के नये रहस्यों की प्रगाढ़ खोज ने वर्तमान रूढ़िवाद को ना सिर्फ़ आग के हवाले किया है, बल्किअपने यौवन की ऊर्जा से एक नयी बहार ऋतु का सृजन भी किया है।
तरुण काव्य भाव से सराबोर इस ऋतु ने एक नए राग की मधुर रूपरेखा पिरोयी है।

राग पलाश!

देश विदेश के सुप्रसिद्ध कवियों और लेखकों द्वारा चुनी हुई विंगवर्ड प्रतियोगिता की चयनित और सराहनीय हिंदी कविताओं को इस राष्ट्रीय स्तर पर वितरित काव्य संग्रह में शामिल किया गया है।

ISBN 978-81-947763-9-0

9 788194 776390

INR 300 | USD 7

WINGWORD

www.wingword.in